राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

इन लोगों को भूल से भी न खाने चाहिए...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

गुरुवार, 24 अगस्त 2023 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 10 अंकः 244 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

चंद्रयान–3 मिशन की शानदार सफलता : भारत ने रचा इतिहास

नई दिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने बुधवार को अंतरिक्ष क्षेत्र में एक नया इतिहास रचते हुए चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडर 'विक्रम' और रोवर 'प्रज्ञान' से लैस एलएम की साफ्ट लैंडिग कराने में सफलता हासिल की। भारतीय समयानुसार शाम करीब छह बजकर चार मिनट पर इसने चांद की सतह को छुआ। इसके साथ ही भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर साफ्ट लैंडिंग कराने वाला दुनिया का पहला देश तथा चांद की सतह पर साफ्ट लैंडिंग करने वाले चार देशों में शामिल हो गया है। इसरो के महत्वाकांक्षी तीसरे चंद्रमा मिशन ''चंद्रयान–3'' के लैंडर मॉड्यूल (एलएम) ने बुधवार शाम चंद्रमा की सतह को चूम कर अंतरिक्ष विज्ञान में सफलता की एक

नयी इबारत रची। वैज्ञानिकों के अनुसार इस अभियान के अंतिम चरण में सारी प्रक्रियाएं पूर्व निर्धारित योजनाओं के अनुरूप ठीक से चली। यह एक ऐसी सफलता है जिसे न केवल इसरो के शीर्ष वैज्ञानिक बल्कि भारत का हर आम और खास आदमी टीवी की स्क्रीन पर टकटकी बांधे देख रहा था। लैंडर 'विक्रम' और रोवर 'प्रज्ञान' से लैस एलएम ने बुधवार शाम 6.04 बजे चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग की। यह एक ऐसी उपलब्धि है, जो अब तक किसी भी देश को हासिल नहीं हुई है। इसरो के अधिकारियों के मुताबिक, लैंडिंग के लिए लगभग 30 किलोमीटर की ऊंचाई पर लैंडर पॉवर ब्रेकिंग फेज में कदम रखता है और गति को धीरे–धीरे कम करके, चंद्रमा की सतह तक पहुंचने के लिए अपने चार थ्रस्टर इंजन की 'रेट्रो फायरिंग' करके उनका इस्तेमाल करना शुरू कर देता है।

ब्रिक्स में बोले पीएम मोदी– लोगों के आपसी संबंध मजबूत कर रहे हैं

नई दिल्ली। ब्रिक्स सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इसने शानदार और लंबी यात्रा की है। लोगों के आपसी संबंध मजबूत कर रहे हैं। अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर जोर दे। पीएम मोदी ने कहा कि ब्रिक्स को एक फ्यूचर रेडी ऑर्गेनाइजेशन बनाने के लिए हमें अपनी सोसाइटी को फ्यूचर

रेडी बनाना होगा। इसमें टेक्नोलॉजी की अहम भूमिका रहेगी। भारत में हमने दूर–सूदूर तथा ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों तक शिक्षा पहुंचाने के लिए दीक्षा यानी डीजिटल इंफ्रस्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग प्लेटफॉर्म बनाया है। साथ ही स्कूल के विद्यार्थियों के बीच इनोवेशव को बढ़ावा देने के लिए हमने देशभर में 10 हजार अटल लैब्स बनाए हैं। पीएम मोदी ने कहा कि भाषा संबंधी बाधाओं को हटाने के लिए भारत में एआई बेस लैंग्वेंज प्लेटफॉर्ध्म भाषणिका इस्तेमाल किया जा रहा है। वैक्सीनेशन के लिए कोविन प्लेटफॉर्म बनाया गया है। डीजिटल प्लेटफॉर्म पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर यानी इंडिया एस्टेक के माध्यम से पब्लिक सर्विस डिलिवरी को रिवाल्यूशनराइज किया जा रहा है।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पुतिन ने लिया हिस्सा

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए 15वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के खुले पूर्ण सत्र में हिस्सा लिया। अगले साल रूस ब्रिक्स की अध्यक्षता ग्रहण करेगा। हमारी अध्यक्षता में हमारे निम्नलिखित आदर्श वाक्य होंगे– वैश्विक विकास और सुरक्षा के लिए बहुपक्षवाद को मजबूत करनाय हमारी लगभग 200 राजनीतिक, आर्थिक और सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित करने की योजना हैय ब्रिक्स शिखर सम्मेलन अक्टूबर 2024 में कजान शहर में होने वाला है।

बोर्ड परीक्षाओं पर सरकार का बड़ा फैसला, साल में दो बार होगी आयोजित, 11वीं–12वीं में पढ़ाई जाएंगी दो भाषाएं

नई दिल्ली। शिक्षा मंत्रालय ने बुधवार को जारी अपने नए पाठ्यक्रम ढांचे में घोषणा की है कि बोर्ड परीक्षाएं अब साल में दो बार आयोजित की जाएंगी और छात्रों को सर्वश्रेष्ठ स्कोर बनाए रखने की अनुमति दी जाएगी। मंत्रालय ने कहा है कि नए पाठ्यक्रम की रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप तैयार की गई है और 2024 शैक्षणिक सत्र के लिए पाठ्यपुस्तकें विकसित की जा रही

हैं। डवम् के नए पाठ्यक्रम ढांचे के अनुसार, कक्षा 11, 12 के छात्रों को अब दो भाषाएँ पढ़नी होंगी जिनमें से एक भाषा भारतीय होनी चाहिए। इसके अलावा, कक्षा 11,12 में विषयों का विकल्प स्ट्रीम (जैसे कला, विज्ञान और वाणिज्य) तक सीमित नहीं होगा और छात्रों के पास तदनुसार चयन करने का विकल्प होगा। शिक्षा मंत्री का बयानः इससे पहले राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा निरीक्षण और **NCTC** समिति की संयुक्त कार्यशाला पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि स्तूरी नंदन के मार्गदर्शन में संचालन समिति ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का पाठ्यक्रम तैयार किया है।

परीक्षाएं साल में दो बार होंगी

शिक्षा मंत्रालय के नए पाठ्यक्रम ढांचे के तहत बोर्ड परीक्षाएं साल में दो बार होंगी, छात्र–छात्राओं को सर्वश्रेष्ठ अंक बरकरार रखने की इजाजत होगी। शिक्षा मंत्रालय के नये पाठ्यक्रम ढांचे के तहत बोर्ड परीक्षाएं महीनों की कोचिंग और रट्टा लगाने की क्षमता के मुकाबले छात्र–छात्राओं की समझ और दक्षता के स्तर का मूल्यांकन करेंगी। शिक्षा मंत्रालय के नये पाठ्यक्रम ढांचे के तहत कक्षाओं में पाठ्य पुस्तकों को कवर करने की मौजूदा प्रथा से बचा जाएगा, पाठ्य पुस्तकों की कीमतों में कमी लाई जाएगी। शिक्षा मंत्रालय के नये पाठ्यक्रम ढांचे के अनुसार, स्कूल बोर्ड उचित समय में 'मांग के अनुसार परीक्षा की पेशकश करने की क्षमता विकसित करेंगे।

जी20 शिखर सम्मेलनः केजरीवाल सरकार का बड़ा फैसला, दिल्ली में 8 से 10 सितंबर तक रहेगा सार्वजनिक अवकाश

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने जी20 शिखर सम्मेलन के मद्देनजर दिल्ली में 8 से 10 सितंबर तक सार्वजनिक अवकाश घोषित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इन तारीखों पर एमसीडी कार्यालयों सहित सभी स्कूल, सरकारी

कार्यालय बंद रहेंगे। सभी स्कूल, शहर सरकार और दिल्ली नगर निगम के कार्यालय और निजी कार्यालय अब तीन दिनों के दौरान बंद रहेंगे। मुख्यमंत्री द्वारा अनुमोदित प्रस्ताव के अनुसार, नई दिल्ली पुलिस जिले के अधिकार क्षेत्र में स्थित बैंकों और वित्तीय संस्थानों सहित सभी वाणिज्यिक और व्यावसायिक प्रतिष्ठान भी 8 से 10 सितंबर तक बंद रहेंगे। एक अधिकारी ने बताया, ष्पुलिस प्रस्ताव पर फाइल मुख्य सचिव नरेश कुमार ने मंजूरी के लिए दिल्ली के मुख्यमंत्री के पास भेज दी है। मुख्यमंत्री की मंजूरी के बाद इसे एलजी की मंजूरी के लिए भेजा जाएगा।ष् 18 अगस्त को, दिल्ली पुलिस के विशेष पुलिस आयुक्त मधुप तिवारी ने मुख्य सचिव को पत्र लिखकर सुझाव दिया कि सरकार 8–10 सितंबर के जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान सार्वजनिक अवकाश घोषित करे और नई दिल्ली क्षेत्र में स्थित अधिकांश व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को बंद करने के निर्देश जारी करे।

छत्तीसगढ़ सीएम के करीबियों पर ईडी का छापा, भूपेश बघेल ने मोदी और शाह को अमूल्य उपहार के लिए कहा थैंक्यू

रायपुर। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार को रायपुर में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के राजनीतिक सलाहकार विनोद वर्मा के साथ–साथ राज्य के अन्य अधिकारियों के आवासीय परिसरों पर छापेमारी की। व्यंग्यात्मक जवाब में, मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को उनके जन्मदिन पर मिले ष्अमूल्य उपहारष् के लिए ष्धन्यवादष् व्यक्त करते हुए जवाब दिया। बघेल के अनुसार, केंद्रीय एजेंसी ने मुख्यमंत्री के विशेष कर्तव्य अधिकारी (ओएसडी) के परिसरों पर भी छापेमारी की। दुर्ग में एक व्यवसायी के परिसरों पर भी तलाशी ली गई। इसके बाद मुख्यमंत्री ने एक्स, जिसे पहले ट्विटर के नाम से जाना जाता था, पर एक पोस्ट में ष्प्रिय प्रधान मंत्री और अमित शाहष् को संबोधित किया और कहा, ष्मेरे जन्मदिन के दिन आज आपने मेरे राजनीतिक सलाहकार एवं मेरे ब्वि सहित करीबियों के यहाँ म्क भेजकर जो अमूल्य तोहफा दिया है, इसके लिए बहुत आभार।

करौली और धौलपुर जिलों में टाइगर रिजर्व को मिली मंजूरी, देश का 54वां अभ्यरण बनने के लिए 4000 परिवार होंगे विस्थापित

जयपुर। राजस्थान के करौली और धौलपुर जिलों में टाइगर रिजर्व (बाघ अभ्यारण्य) बनाया जाएगा। राष्ट्रीय बाघ सरंक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) ने इसके लिए मंजूरी दे दी है। करौली और धौलपुर में बनने वाला ये टाइगर रिजर्व (बाघ अभ्यारण्य) देश का 54वां अभ्यारण्य होगा जो बाघों को समर्पित होगा। राजस्थान में खुलने वाला ये पांचवा टाइगर रिजर्व होगा। ये जानकारी पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन के केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने दी है। बता दें कि वर्तमान में राजस्थान में रणथम्भौर, सरिस्का, मुकुंद्रा हिल्स और रामगढ़ विषधारी यानी कुल चार बाघ अभ्यारण्य है। इसके बाद यह पांचवा बाघ अभयारण्य है जो

राजस्थान में शुरू होगा। वहीं राजस्थान के कुम्भलगढ़ को बाघ अभ्यारण्य घोषित करने के प्रस्ताव को सैद्धांतिक मंजूरी दे दी गई है। यादव ने एक अन्य 'एक्स' पोस्ट में कहा, ''यह जानकारी साझा करते हुए खुशी हो रही है कुम्भलगढ़ को बाघ अभ्यारण्य घोषित करने के प्रस्ताव को सैद्धांतिक मंजूरी दे दी गई है। यह राजस्थान में बाघों के उज्जवल भविष्य और जैव विविधता की दिशा में वन्यजीव संरक्षण का अहम कदम है।'' उन्होंने कहा कि इस कदम से इकोटूरिज्म के जरिये रोजगार के अवसर को बढ़ावा मिलेगा। एनसीटीए ने प्रस्ताव को चार अगस्त को मंजूरी दी और मंगलवार को सैद्धांतिक रूप केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने मंजूरी दी। गावों को किया जाएगा विस्थापितः धौलुपर करौली में बनने वाले इस अभ्यारण्य के लिए इलाके के कुल 50 गांवों को विस्थापित किया जाएगा। इस विस्थापन की सीमा में आने वाले लोगों को जल्द ही जमीन देने के लिए कम्पनसेशन राशि सरकार देगी। इस विस्थापन से पहले वन विभाग के अधिकारी सर्वे शुरू करेंगे। विस्थापन के दायरे में आने वाले गांवों की पहचान कर उनकी सूची बनाई जा रही है। इसके बाद उन्हें मुआवजा राशि दी जाएगी। इसके साथ ही सहमति पत्र भी उनसे लिया जाएगा। गांवों के विस्थापन के बाद ही यहां टाइगर रिजर्व (बाघ अभ्यारण्य) का काम शुरू हो सकेगा।

कुल 2800 वर्ग किलोमीटर में है अभ्यारण्य

प्रस्तावित कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य करीब 2800 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। एनटीसीए सदस्य एवं राजसमंद से सांसद दिया कुमारी ने कहा, ''आज मेवाड़ के लिए ऐतहासिक दिन है और परियोजना को हरी झंडी देने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव का आभार व्यक्त करती हूं।'' उन्होंने कहा, '' मैंने कई बाधाओं के बावजूद पूरी कोशिश इस परियोजना को जमीन पर लाने के लिए की। मैं खुश हूं कि केंद्र सरकार ने आज इसे सैद्धांतिक मंजूरी दे दी और हमे कुम्भलगढ़ के जल्द बाघ अभ्यारण्य बनने की उम्मीद कर सकते हैं।'' सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश में 2018 में कुल 2,967 बाघ थे जो 2022 में बढ़कर 3,682 हो गए हैं। इस प्रकार बाघों की संख्या में सालाना छह प्रतिशत की वृद्धि हुई है। राजस्थान में बाघों की संख्या 2006 के 22 से बढ़कर 2022 में 88 हो गई है।

कश्मीर में दिन–रात समाचारों की चिंता करने वाले Media के स्वास्थ्य की चिंता कर रहा प्रशासन

श्रीनगर। पत्रकार को समाचार जल्द से जल्द देने की इतनी चिंता रहती है कि वह अपने स्वास्थ्य की चिंता करना भूल जाता है। लेकिन जम्मू–कश्मीर में पत्रकारों के स्वास्थ्य की चिंता करते हुए एक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। प्रेस सूचना ब्यूरो श्रीनगर ने मीडियाकर्मियों के लिए जो चिकित्सा शिविर आयोजित किया उसको लेकर पत्रकारों में काफी उत्साह भी देखने को मिला। सुबह–सुबह ही बड़ी संख्या में मीडियाकर्मी मेडिकल चेक–अप के लिए मेडिकल कैंप के अंदर कतार में खड़े हो गये थे। हम आपको यह भी बता दें कि चिकित्सा शिविर श्रीनगर के पारस अस्पताल के सहयोग से आयोजित किया गया था।

मायावती का बड़ा फैसला, 2024 लोकसभा चुनाव में अकेले उतरेगी बसपा, भाजपा और कांग्रेस पर साधा निशाना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के नेतृत्व वाली बहुजन समाज पार्टी ने अगले साल अपने दम पर लोकसभा चुनाव लड़ने का फैसला किया है। यह घोषणा इस साल के अंत में विभिन्न राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव लड़ने के निर्णय के एक महीने बाद आई। एक बयान में, बसपा ने कहा, ष्आगामी लोकसभा आम चुनाव अकेले लड़ने के लिए, बसपा हर गांव में अपने कैडर को मजबूत करेगी और समाज में जन संपर्क बढ़ाएगी। पार्टी के वरिष्ठ सदस्यों के साथ बैठक में, मायावती ने प्रगति की समीक्षा की। पार्टी कार्यकर्ताओं को पिछले निर्देशों पर लोकसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों का सावधानीपूर्वक चयन करने के निर्देश भी जारी किए गए थे। पिछले गठबंधनों के बारे में बोलते हुए, पार्टी ने कहा कि उसके

वोट उसके सहयोगियों को स्थानांतरित हो गए लेकिन उसके सहयोगियों के पास बसपा के लिए ऐसा करने का ष्इरादा या क्षमताष् नहीं थी। 2019 के लोकसभा चुनावों से पहले, बसपा महागठबंधन का हिस्सा बन गई, एक ऐसा गठबंधन जिसका झुकाव न तो भाजपा और न ही कांग्रेस की ओर था। बीएसपी ने बीजेपी पर श्सांप्रदायिक राजनीतिश् करने का आरोप लगाते हुए कहा कि सत्तारूढ़ दल ने केवल अराजकता को बढ़ावा दिया है। बसपा के बयान में कहा गया है, श्श्इसके कारण भाजपा न केवल अपना प्रभाव खो रही है बल्कि अपना जनाधार भी खो रही है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए बसपा ने कहा, ष्कांग्रेस की ही तरह, भाजपा की करनी और कथनी मेल नहीं खाती। लोग कम कमा रहे हैं और मुट्ठीभर लोगों को छोड़कर बाकी सभी लोगों पर महंगाई की मार पड़ रही है।

दर्जनों गांवों के लोगों का शुद्ध पेयजल मिलने का सपना अधूरा

क्षेत्र के लगभग एक दर्जन गांवों के लोगों का शुद्ध पेयजल मिलने का सपना अधूरा रह गया हालत यह है कि सात साल पहले बने पानी की टंकी मानक के विपरित बनाए जाने से पानी की आपूर्ति इस टंकी से अभी तक नहीं हो पाई

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उतरौला,बलरामपुर। क्षेत्र के लगभग एक दर्जन गांवों के लोगों का शुद्ध पेयजल मिलने का सपना अधूरा रह गया। हालत यह है कि सात साल पहले बने पानी की टंकी मानक के विपरित बनाए जाने से पानी की आपूर्ति इस टंकी से अभी तक नहीं हो पाई है। शासन ने विकास खण्ड श्रीदत्तगंज क्षेत्र के लगभग एक दर्जन गांवों में ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए लगभग पांच लाख रुपए की लागत से पानी की टंकी का निर्माण कराया। पानी की टंकी के निर्माण के साथ ट्यूबवेल का रिबोर कराया गया। ट्यूबवेल रिबोर कराने के बाद इसके लिए मोटर पम्प लगा दिया गया।

कुछ जगहों पर पानी की आपूर्ति के लिए पाइप लाइन गांवों में बिछा दिया गया परन्तु पानी की टंकी मानक के विपरित निर्माण होने पर जगह जगह दीवार अथवा उसके फर्श में दरार ले लिया और पानी जगह जगह से बह जाने लगा। इससे ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं हो पा रहा था। तमाम जगहों से पानी आपूर्ति न हो पाने से मोटर पम्प चोरी चलें गये। ग्राम पिंपरी में लगभग सात साल पहले बने पानी की टंकी खराब होने से बंद पड़ी है। उसका मोटर पम्प काफी समय पहले चोरी हो गया। ग्रामीण राम देव, मंजूर अहमद, शिव कुमार, जनक राम, जलालुद्दीन, मोहम्मद बशीर ने बताया कि पानी की टंकी मानक के विपरित निर्माण किए जाने से ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल की आपूर्ति नहीं हो सकीं है। पानी आपूर्ति का मोटर पम्प काफी पहले चोरी हो गया है। इसके रखरखाव की जिम्मेदारी किसी विभाग ने नहीं ली है। सहायक पंचायत अधिकारी विकास खण्ड श्रीदत्तगंज बाबूराम पाण्डेय ने बताया कि पानी की टंकी कब व किस विभाग ने निर्माण कराई है।

इसकी जानकारी विकास खण्ड कार्यालय पर उपलब्ध नहीं है। पानी की टंकी के रखरखाव की जिम्मेदारी पंचायत विभाग के पास नहीं है। टंकी का निर्माण किस विभाग ने बनवाया है इसका पता लगाकर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

रोजगार सेवकों ने अपनी मांगों को लेकर खंड विकास अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सादुल्लानगर,बलरामपुर। रेहरा बाजार–स्थानीय विकासखंड कार्यालय में 23 अगस्त बुधवार को ग्राम रोजगार सेवकों की बैठक हुई बैठक में विभिन्न समस्याओं के निस्तारण के लिए रोजगार सेवकों ने 8 सूत्री ज्ञापन मुख्यमंत्री को संबोधित सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) रेहरा बाजार को सौंपा। ग्राम रोजगार सेवक एकता संघर्ष समिति के तत्वाधान में बैठक हुई बैठक में वर्ष 2021 में मनरेगा कर्मियों व रोजगार सेवकों के हित में मुख्यमंत्री द्वारा की गई घोषणाओं का शासनादेश जारी न होने पर विरोध जताया समिति के ब्लाक अध्यक्ष राधे श्याम यादव की अनुपस्थिति में कार्यकारिणी समिति के मंत्री अनूप सिंह व अजय वर्मा ने कहा कि 4 अक्टूबर 2021 में मुख्यमंत्री ने रोजगार सेवकों के लिए कई एक घोषणाएं की थी इनमें मनरेगा कर्मियों के लिए एच आर पॉलिसी लाने, रोजगार सेवकों की सेवा समाप्ति से पहले मनरेगा उपायुक्त से सहमति लेने, रोजगार सेवकों के जाब चार्ट में ग्राम में विकास विभाग के अन्य कार्यों को जोड़े जाने की घोषणाएं की थी इस घोषणा के संबंध में शासनादेश जारी न होने पर रोजगार सेवकों ने 8 सूत्री ज्ञापन मुख्यमंत्री को संबोधित सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) इरफानुल्लाह खांन को सौंपा, इस अवसर पर, ए पीओ विकास सोनकर चिंताराम वर्मा गुलाम जीलानी बेग अर्जुन कुमार वर्मा अनूप सिंह अजय वर्मा जेपी यादव सुनील पांडे गुलजार अहमद खान राधेश्याम ओम प्रकाश मोहम्मद नसीम शाह कनिक राम कुलभूषण शंभू दयाल जनक प्रसाद गुलजार अहमद खान वीरेंद्र कुमार अशोक कुमार अब्दुल मन्नान राम बहादुर एवं समस्त रोजगार सेवक मौजूद रहे।

जनपद न्यायाधीश ने की प्रशासनिक अधिकारियों के साथ की बैठक

दैनिक बुद्ध का सन्देश

संतकबीरनगर। जिला जज अनिल कुमार वर्मा प्रथम ने आगामी 09 सितम्बर 2023 को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत के तैयारियों के बाबत जनपद के समस्त प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठक आहुत किया। बैठक की अध्यक्षता जनपद न्यायाधीश अनिल कुमार वर्मा तथा संचालन जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं अपर जिला जज विकास गोस्वामी द्वारा किया गया। बैठक में जिला जज ने समस्त प्रशासनिक अधिकारियों से आवाहन किया कि वह अपने–अपने विभाग एवं कार्यालय में दिनांक 09 सितम्बर 2023 को होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन कर ज्यादा से ज्यादा वादों एवं मामलों का निस्तारण करवाने का प्रयास करें। कलेक्ट्रेट से बताया गया की राष्ट्रीय लोक अदालत से संबंधित समस्त तैयारियां पूर्ण हो चुकी हैं तथा ज्यादा से ज्यादा वादों एवं मामलों का निस्तारण के लिए प्रयास किया जा रहा है। पुलिस विभाग के तरफ से बताया गया कि न्यायालय से प्राप्त हो रहे हैं नोटिसों को पक्षकारों को तमिला करवाया जा रहा है एवं समस्त थानों के पैरोकारों को ज्यादा से ज्यादा नोटिस तामिला करवाने हेतु निर्देशित किया गया है। जिला जज अनिल कुमार वर्मा द्वारा बताया गया कि आगामी 09 सितम्बर 2023 को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने के लिए आप सभी अधिकारियों से सहयोग की अपेक्षा है। बैठक में नोडल अधिकारी लोक अदालत जैनुद्दीन अंसारी, कलेक्ट्रेस्ट से अपर उपजिलाधिकारी रमेश चंद्र, पुलिस विभाग से क्षेत्राधिकारी दीपांशी राठौर, तहसीलदार मेहदवाल सुनील कुमार, तहसीलदार खलीलाबाद जनार्दन, पीडब्लूडी विभाग से विमल कुमार, श्रम विभाग से प्रिंस कुमार झा, बांट–माप विभाग से दिनेश कुमार, सूचना विभाग से अनिल कुमार सिंह, पंचायती राज विभाग से अमित कुमार, नगर पालिका खलीलाबाद से उमेश चौधरी, विद्युत विभाग से आर०पी० तिवारी, वन विभाग से रनविजय सिंह, सप्लाई विभाग से सुनीता कुमारी, समाज कल्याण विभाग से महेंद्र कुमार, तहसीलदार धनघटा योगेंद्र कुमार पांडेय, संभागीय परिवहन विभाग से प्रियंका सिंह, कोर्ट मैनेजर अनुराग सिंह, कार्यालय लिपिक राम भवन चौधरी आदि लोग उपस्थित रहे।

चन्द्रयान की सफलता के लिये विश्व हिन्दू महासंघ ने किया श्री हनुमान चालीसा का पाठ

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बस्ती। चंद्रयान–3 के चन्द्रमा पर सुरक्षित पहुंचने को लेकर

देश भर में उत्साह का वातावरण है और लोग पूजा पाठ कर ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि इसरो वैज्ञानिकों के श्रम और साधना सफल हो। बुधवार को विश्व हिन्दू महासंघ अध्यक्ष अखिलेश सिंह के संयोजन में महासंघ पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं ने अमहट घाट स्थित श्री सिद्धेश्वर मंदिर पर विशेष पूजा पाठ, श्री हनुमान चालीसा का पाठ और हवन कर प्रार्थना किया कि चंद्रयान–3 को सफलता मिले। विश्व हिन्दू महासंघ अध्यक्ष अखिलेश सिंह ने कहा कि देश के लिये यह गौरव का क्षण है। हमारे इसरो के वैज्ञानिकों ने ऐसा अवसर दिया है। यह भारतवासियों के लिये प्रसन्नता का क्षण है। महासंघ के प्रदेश महामंत्री ओम प्रकाश यादव ने कहा कि चंद्रयान–3 के चन्द्रमा पर पहुंचने की यात्रा देश के लिये बड़ी उपलब्धि होगी। इससे भारत दुनियां के ऐसे देशों में शामिल हो जायेगा जिन्हें चांद पर पहुंचने में सफलता मिली है। प्रदेश महामंत्री दिग्विजय सिंह राना ने कहा कि चांद को छू लेने का मन तो सबका करता है, भारतीय वैज्ञानिकों ने इसे सिद्ध कर दिखाया है। चन्द्रयान की सफलता हेतु श्री हनुमान चालीसा का पाठ और हवन कर प्रार्थना करने वालों में मुख्य रूप से महासंघ के महन्थ गिरजेश दास, सौरभ तिवारी, विन्द गोपाल त्रिपाठी, राजकुमार उर्फ मन्टू चौधरी, वीरेन्द्र सिंह, मुकेश कुमार, पूनम सिंह, संदीप तिवारी, संदीप मिश्र, उपेन्द्र सिंह, राकेश सिंह, बाबा जय प्रकाश दास, अमरजीत सिंह, विजय शंकर शुक्ल आदि शामिल रहे।

112 पुलिस टीम पर हमला ग्राम प्रधान सहित चार गिरतार

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोंडा। खरगूपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत चोरी परिहार में घर की जमीन को लेकर दो भाइयों में आपसी विवाद हो गया जिसमें अजय पुत्र राम दत्त द्वारा 112 पर सूचना दी गई मौके पर पहुंचे पीआरबी 0886 के कर्मचारी गण कांस्टेबल कृष्णा कुमार कांस्टेबल संतोष कुमार तथा चालक होमगार्ड जबबाद अली मौके पर पहुंचे जहां पर मिली जानकारी के अनुसार कर्मचारी गण शिकायत सुन रहे थे कि तभी ग्राम चोरी परिहार के निवासीगढ़ अजय सिंह सहित आदि लोगों ने कर्मचारियों को गाली गलौज देने लगे उक्त प्रकरण को पीआरबी कि उक्त कर्मचारी के द्वारा सूचना पर मौके पर उप निरीक्षक चंद्रसेन वर्मा हमराही कर्मचारी गण हेड कांस्टेबल अनिल कुमार यादव कांस्टेबल शैलेश पासवान महिलाराक्षी शताक्षी शुक्ला महिला आरक्षी शिवानी सिंह सरकारी जीप संख्या यूपी 43 जी 0141 के मौके पर ग्राम चोरी परिहार पहुंचा तो देखा कि अजय सिंह पुत्र राम दत्त सिंह श्रीमती गीता देवी पत्नी अजय सिंह संतोष सिंह पुत्र रामदत्त सिंह श्रीमती सुधा देवी पत्नी संतोष सिंह अरुण सिंह पत्नी स्वर्गीय रामदत्त सिंह श्रीमती सावित्री देवी पत्नी अरुण सिंह अतुल सिंह पुत्र रामदत्त सिंह अभय सिंह उर्फ रिंकू पुत्र नरसिंह बहादुर सिंह सम्राट सिंह पुत्र छेदी सिंह विजयपाल सिंह पुत्र बजरंगी सिंह सहित 8 से 10 अज्ञात व्यक्तियों द्वारा मारपीट की जा रही थी निवासीगढ़ ग्राम चोरी परिहार थाना खरगूपुर जनपद गोंडा द्वारा कर्मचारियों को मारा पीटा जा रहा था जिसको देखते हुए किसी तरीके से कर्मचारियों ने अपनी जान बचाकर भाग हल्का निकले हल्का दरोगा ने बताया कि ग्राम प्रधान सहित चार लोगों को गिरतार कर लिया गया है आरोपियों के ऊपर थाने पर 147 / 148 / 149 / 307 / 332 / 353 / 504 / 506 भादवि0 व ६.र.। एक्ट के तहत मुकदमा पंजी.त किया गया है।

डी फार्मा की मान्यता मिलने के बाद सूर्या ग्रुप में खुशी की लहर

सूर्या ग्रुप के शिक्षकों ने सूर्या ग्रुप के एमडी डॉक्टर उदय प्रताप चतुर्वेदी को मिठाई खिलाकर दी बधाई

दैनिक बुद्ध का सन्देश

संतकबीरनगर। जिले में जहां खुशी की लहर है वही जनपद ही नहीं बल्कि पूरे पूर्वांचल में शिक्षा के साथ–साथ स्वास्थ्य क्षेत्र में बेहतर मुकाम हासिल करने वाले सूर्या ग्रुप ने जनपद वासियों को एक नई सौगात दी है सूर्या कॉलेज आफ फार्मेसी को डी फार्मा की मान्यता मिल गई है जिसको लेकर पूरे जनपद में खुशी की लहर है मान्यता मिलने के बाद सूर्या ग्रुप के शिक्षकों ने संस्थान के एमडी डॉ उदय प्रताप चतुर्वेदी को मिठाई खिलाकर बधाई दी है। आपको बता दे की जिले का सूर्या ग्रुप जहां शिक्षा के क्षेत्र में एक बेहतर मुकाम हासिल करते हुए पूरे मंडल में टॉपर देने का काम कर रहा है वहीं स्वास्थ्य क्षेत्र में सूर्या पैरामेडिकल कॉलेज का निर्माण करते हुए मरीज को बेहतर सुविधा देने का काम कर रहा है स्वास्थ्य क्षेत्र के शिक्षा को लेकर भी सूर्या परिवार हमेशा तत्पर है जिसको लेकर आज सूर्या ग्रुप को बड़ी सौगात मिली है सूर्या कॉलेज आफ फार्मेसी को डी फार्मा की मान्यता मिल गई है जिसको लेकर खुशी की लहर है सत्र– 2023 –24 को लेकर 60 सीटो के लेकर आज से प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो गई है मान्यता मिलने के बाद सूर्या ग्रुप के शिक्षकों ने संस्थान के एमडी डॉ उदय प्रताप चतुर्वेदी को मिठाई खिलाते हुए बधाई दी है। इस दौरान डॉक्टर उदय प्रताप चतुर्वेदी ने कहा कि सूर्या कॉलेज आफ फार्मेसी को पहले सत्र में 60 सीटो के लिए मान्यता मिल गयी जिसको लेकर प्रवेश प्रक्रिया शुरू कर दी गई है स्वास्थ्य क्षेत्र में रुचि रखने वाले छात्र–छात्राएं समय से पहुंचकर अपना एडमिशन सुनिश्चित कर सकते हैं जल्द ही सूर्या ग्रुप में जीएनएम और बीएससी नर्सिंग होम की भी कक्षाएं प्रारंभ की जाएगी। छात्र–छात्राओं को शिक्षा के साथ–साथ स्वास्थ्य क्षेत्र में भी जोड़ने के लिए यह करवा शुरू किया गया है जो निरंतर चलता रहेगा।

कृषकों का फसल बीमा पोर्टल 25 अगस्त तक खुला रहेगा

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। उप .षि निदेशक जय प्रकाश ने अवगत कराया है कि खरीफ–2023 मौसम में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अन्तर्गत बीमा कराने की अन्तिम तिथि 31 जुलाई, 2023 थी, को बढ़ाकर 10 अगस्त, 2023 कर दिया गया था, जिसके फलस्वरूप .षकों का विवरण अपलोड करने के लिए फसल बीमा पोर्टल 25 अगस्त, 2023 तक खुला रहेगा, उन्होंने बताया कि जनपद की समस्त बैंक शाखाओं को अपने स्तर से खरीफ 2023 मौसम का फसल बीमा पोर्टल पर छुटे हुये किसानों का विवरण निर्धारित समयान्तर्गत अपलोड करने के लिए निर्देशित किया गया है।

सीडीओ की उपस्थिति में उचित दर विक्रेता/राशन कोटे की दुकान पर कराया गया पैक्ड खाद्यान्न का वितरण

दैनिक बुद्ध का सन्देश

संतकबीरनगर। जिलाधिकारी संदीप कुमार के निर्देशन में

मुख्य विकास अधिकारी संत कुमार द्वारा सरकारी योजनाओ का लाभ लक्षित वर्ग/समूह के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचने/प्राप्त होने की पुष्टि हेतु खाद्य एवं रसद विभाग के लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत करते हुए विकास खण्ड–नाथनगर की ग्राम पंचायत–तिघरा के उचित दर विक्रेता अनीता देवी की कोटे की दुकान पर स्वयं उपस्थित होकर राशन कार्डधारकों को उनके कार्ड पर अनुमन्य मात्रा के अनुसार दिनांक 23 अगस्त 2023 को सिली हुई बोरियों में पैक खाद्यान्न का वितरण कराया गया। जिला पूर्ति अधिकारी राजीव शुक्ला ने बताया कि अन्त्योदय योजना के कार्डधारकों को 14 किग्रा0 गेहूँ तथा 21 किग्रा0 चावल तथा पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को प्रति यूनिट 02 किग्रा0 गेहूँ तथा 03 किग्रा0 चावल निःशुल्क वितरण नामित नोडल अधिकारी की उपस्थिति में कराया गया। उचित दर दुकान पर आवश्यक सूचनाओं का प्रदर्शन जैसे–स्टॉक बोर्ड, साईन बोर्ड, टोल फ्री नं0, अन्त्योदय कार्डधारकों की सूची आदि प्रदर्शित पायी गई।

बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने किया जनपद का दौरा

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। अध्यक्ष, उ0प्र0 राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग डॉ0 देवेन्द्र षर्मा की अध्यक्षता एवं जिलाधिकारी संजीव रंजन की उपस्थिति में जिला बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष, उ0प्र0 राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग डॉ0 देवेन्द्र षर्मा ने निर्देष दिया कि पात्र लाभार्थियों को सभी योजनाओं का लाभ दिलाया जाये। जिला विद्यालय निरीक्षक/जिला बेसिक षिक्षा अधिकारी को निर्देष दिया कि विद्यालय के 100 मीटर के आस–पास नषीले पदार्थ, धूम्रपान आदि की दुकाने संचालित न हों। उन्होने कहा कि जनपद सिद्धार्थनगर नेपाल बार्डर से सटा है जिसके कारण बच्चों की तस्करी रोकने की प्रभावी कार्यवाही सुनिष्चित किया जाये। सहायक श्रमायुक्त सुमन सिंह को निर्देष दिया कि किसी भी दुकान पर नाबालिग बच्चों द्वारा कार्य न लिया जाये इसके तहत छापेमारी की कार्यवाही की जाये। इस अवसर पर क्षेत्राधिकारी सदर अखिलेष वर्मा, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 विनोद कुमार अग्रवाल, जिला विद्यालय निरीक्षक उपेन्द्र कुमार, जिला बेसिक षिक्षा अधिकारी देवेन्द्र कुमार पाण्डेय, जिला प्रोबेषन अधिकारी विनोद राय, जिला आबकारी अधिकारी वीर अभिमन्यू सिंह, जिला कार्यक्रम अधिकारी षुभांगी कुलकर्णी, सहायक श्रमायुक्त सुमन सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी पवन कुमार व अन्य सम्बंधित अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे।

डीएम से की ईओ की शिकायत, कार्रवाई की मांग

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। कपिलवस्तु थाना क्षेत्र के धर्मेन्द्र निवासी मुहल्ला–सरोजनी नगर, नरायनपुर वार्ड नं. 11 नगर पंचायत कपिलवस्तु पोस्ट–बर्डपुर तहसील नौगढ़ निवासी ने अपनी पत्नी सरिता के नाम से प्रधानमंत्री आवासीय योजना के अन्तर्गत आवेदन दिया था। उसकी पत्नी का नाम पात्रता सूची में भी है। वर्तमान अधशासी अधिकारी महोदय भी जांच में गये थे उस समय मै घर पर मौजूद नहीं था अधिशासी अधिकारी ने उसकी पत्नी को नगर पंचायत कार्यालय पर बुलाया। वह नगर पंचायत कार्यालय पर गया अधिशासी अधिकारी ने उसको अलग बुलाकर कहा कि तुम्हारा विरोध वर्तमान सभासद कर रहें है। उन्होंने उससे पांच हजार रूपये की मांग करते हुए कहा कि उसके बाद वह उसे आवास निर्माण का रूपया दिला देंगे। उसने रूपया देने में अपनी असमर्थता व्यक्त किया तो अधिशासी अधिकारी कहने लगे कि तब नहीं हो पायेगा क्योंकि उन्हें उपर के अधिकारियों को देकर पास कराना पड़ता है। धर्मेन्द्र ने जिलाधिकारी को दिए पत्र में कहा है कि प्रधानमंत्री आवासीय योजना की सूची को किसी सक्षम अधिकारी से जांच कराकर पात्र लोगों को उपरोक्त योजना का लाभ देने की मांग की है।

दिव्यांग विद्यार्थियों का एक सितंबर से बनेगा दिव्यांगता प्रमाण पत्र

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। समेकित शिक्षा के तहत स्कूलों में पढ़ने वाले दिव्यांग बच्चों के दिव्यांगता प्रमाण पत्र बनाए जाएंगे। इसके लिए जनपद के सभी 14 ब्लाक संसाधन केंद्र पर एक से 23 सितंबर के बीच एक दिवसीय शिविर लगाया जाएगा। बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेंद्र कुमार पांडेय ने बताया कि शासन की ओर से कक्षा एक से 12 तक में पढ़ने वाले दिव्यांग छात्रों के प्रमाण–पत्र बनाए जाने हेतु निर्देश दिए गए हैं। चिकित्सकों की टीम द्वारा आंकलन करने के बाद मेडिकल एसेसमेंट कैंप में दिव्यांगता प्रमाण पत्र बनाए जाएंगे। बच्चों को कैम्प में तीन फोटो और आधार कार्ड लेकर आना होगा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. वीके अग्रवाल की ओर से कैम्प में चिकित्सकों और स्टाफ की ड्यूटी तय कर दी गई है। जिला समन्वयक (समेकित शिक्षा) करुणापति त्रिपाठी ने बताया कि एक सितंबर को बीआरसी बांसी में कैंप लगाया जाएगा। इसके बाद बीआरसी बढ़नी में दो सितंबर, भनवापुर में पांच सितंबर, बर्डपुर में छह सितंबर, डुमरियागंज में आठ सितंबर, इटवा में 12 सितंबर, जोगिया में 13 सितंबर, खेसरहा में 14 सितंबर, मिठवल में 15 सितंबर, शोहरतगढ़ में 16 सितंबर, खुनियांव में 20 सितंबर, नौगढ़ में 21 सितंबर, लोटन में 22 सितंबर व उसका बाजार में 23 सितंबर को शिविर लगाया जाएगा।

श्रीकृष्णा द स्कूल में चंद्रयान 3 की लैंडिंग का लाइव दिखाया गया

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका,सिद्धार्थनगर। साइंस और टेक्नोलॉजी देश के उज्ज्वल भविष्य का आधार है। बुधवार को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान का चंद्रयान 3 चंद्रमा पर तय समय 6 बजकर 4 मिनट पर सुरक्षित लैंड

कर गया। उत्साह, उमंग और गर्व के इस अवसर पर श्री.ष्णा द स्कूल उसका बाजार में टीचर एवम बच्चो ने इसे लाइव देखा। चंद्रयान 3 के लैंडिंग की घोषणा होते ही तालिया बजने लगी। भारत माता की जय के नारे लगाए गए। लोगो ने देश के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना किया। इस अवसर पर धर्मेंद्र कुमार पाण्डेय, सुभाष चंद्र यादव, सतेंद्र पाण्डेय, रिशु पाण्डेय, संध्या साहनी आदि उपस्थित रही।

शुभम कुमार दूबे सीआईएसएफ में हुए चयन, बढ़ाया जिले का नाम

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका,सिद्धार्थनगर। कस्बे के इंद्रानगर (उडवलिया)निवासी शुभम कुमार दूबे पुत्र वीरेंद्र कुमार दूबे ने सीआईएसएफ में चयन होकर जिले का नाम बढ़ाया है शुभम ने पढ़ाने के साथ साथ तैयारी भी करते थे घर से ही लगभग दो साल तैयारी करने के बाद सीआईएसएफ ने चयनित हुए। मिली जानकारी के अनुसार शुभम एक किसान परिवार से आते है। इनके परिजनों ने बताया कि शुभम का किताबो से ज्यादा लगाव था और बचपन से ही इनका तमन्ना था कि पढ़ लिखकर एक सफलता का मुकाम हासिल करेंगे। शुभम ने बताया कि माता–पिता और गुरुजनों के आशीर्वाद से मिली है। इसके लिए मैं सभी का जीवन भर आभारी रहूंगा। इस मौके पर शिक्षक विधायक ध्रुव कुमार त्रिपाठी, नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि हेमंत कुमार जायसवाल, रामायन मिश्र, हरिशंकर सिंह, रूपेश सिंह, धर्मेंद्र पांडेय, पवन जायसवाल, अनंत मिश्रा देवेंद्र श्रीवास्तव, अभय श्रीवास्तव आदि लोगो ने बधाईयां दी।

आठ सूत्रीय मांगों को लेकर बीडीओ को सौंपा ज्ञापन

ग्राम रोजगार सेवक एकता संघर्ष समिति के तत्वाधान में रोजगार सेवकों ने उठाई मांग

दैनिक बुद्ध का सन्देश

डुमरियागंज,सिद्धार्थनगर। ग्राम रोजगार सेवक एकता संघर्ष समिति के प्रांतीय नेतृत्व के आह्वान पर बुधवार को विकास खण्ड भनवापुर के रोजगार सेवको एवं मनरेगा कर्मियों ने आठ सूत्रीय मांगों को लेकर एक ज्ञापन खंड विकास अधिकारी भनवापुर आलोक कुमार उपाध्याय को देते हुए समस्याओं के समाधान की मांग की। मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन में मांग के बारे में जानकारी देते हुए ब्लॉक अध्यक्ष राज कुमार चौधरी ने बताया कि 4 अक्टूबर 2021 को डिफेंस एक्सपी वृंदावन लखनऊ में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में मनरेगा कर्मियों का सम्मेलन किया गया था जिसमें मुख्यमन्त्री ने अपने मुख से मनरेगा कर्मियों एवं ग्राम रोजगार सेवकों के लिए निम्नवत घोषणा की थी। जिसमे मनरेगा कर्मियों के लिए एच आर पॉलिसी एक माह में लाएगे। ग्राम रोजगार सेवकों की सेवा समाप्ति से पहले उपायुक्त मनरेगा की सहमति लेना होगी। ग्राम रोजगार सेवको के जॉब चार्ट में ग्राम्य विकास विभाग के अन्य कार्यों को जोड़ा जाएगा। ई०पी०एफ समस्या, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश की तर्ज पर मानदेय बढोत्तरी शामिल था। मुख्यमन्त्री द्वारा मनरेगा कर्मियों के सम्मेलन में उक्त बिंदुओं की घोषणाए किए 2 वर्ष हो चुके है लेकिन अभी तक शासनादेश निर्गत नहीं किए गए। जिसको लेकर उत्तर प्रदेश के समस्त ग्राम रोजगार सेवकों एवं मनरेगा कर्मियों में आक्रोश है। ब्लॉक सदस्य मंडल अजय यादव ने कहा कि ग्राम रोजगार सेवकों को नियमित करते हुए राज्य कर्मचारी का दर्जा दिया जाए व पद नाम ग्राम विकास सहायक किया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि कोविड के अतिरिक्त आकस्मिक दुर्घटना से मृत्यु होने पर उनके आश्रित को सेवा में समायोजित किया जाए। ज्ञापन देने के बाद सभी रोजगार सेवकों ने कहा कि अगर समस्याओं का समाधान शीघ्र ही नहीं हुआ तो आगे संगठन के आदेश पर आरपार की लड़ाई लड़ी जाएगी। इस मौके पर सतीश शुक्ला, अशोक कुमार, कैलाश दुबे, रौनक परवीन, संगीता देवी, ओमप्रकाश, राम प्रसाद, विश्वनाथ मौर्य, आलोक चौधरी, सूर्य प्रकाश, जहांगीर अशरफ प्रभुनाथ, अली मूर्तजा, राम सागर शेषराम यादव, जोखूराम आदि लोग मौजूद रहे।

उसका ब्लॉक में रोजगार ने बीडीओ को मांग पत्र सौंपा

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका,सिद्धार्थनगर। उसका ब्लॉक परिसर में बुधवार को ग्राम रोजगार वेलफेयर एसोशिएशन के बैनर तले रोजगार सेवकों की बैठक हुई। इसमें शासनादेश निर्गत करने संबंधी आठ सूत्रीय ज्ञापन रोजगार कर्मियो ने बीडीओ श्याम मुरली मनोहर जोशी को सौंपा है। साथ ही सामूहिक रूप से मुख्यमंत्री को ट्विट कर उनकी ओर से किए गए। घोषणाओं की याद दिलाया है।

संघ के ब्लॉक अध्यक्ष नवल किशोर गुप्ता ने बताया कि चार अक्टूबर 2021 को मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में मनरेगा कर्मियों का सम्मेलन हुआ था। इसमें मुख्यमंत्री ने खुद ही मनरेगा कर्मियों और रोजगार सेवकों के लिए घोषणाएं की थी। उन्होंने कहा था कि मनरेगा कर्मियों के लिए एक एचआर पालिसी एक माह में लाएंगे, ग्राम रोजगार सेवकों की सेवा समाप्ति से पहले उपायुक्त मनरेगा की सहमति लेनी होगी। ग्राम रोजगार सेवकों के जॉब चार्ट में ग्राम्य विकास विभाग के अन्य कार्यों को जोड़ा जाएगा। ईपीएफ समस्या, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश की तर्ज पर मानदेय बढ़ोतरी की जाएगी। तीन बिन्दुओं पर घोषणा किए दो वर्ष हो चुके हैं पर अभी तक शासनादेश निर्गत नहीं किया गया। इन्हीं बिंदुओं पर संघर्ष शुरू किया गया है। अगर सरकार ध्यान नहीं दी तो फिर आंदोलन किया जाएगा। इस मौके पर प्राची शुक्ला, राधेश्याम विश्वकर्मा,राम सुभाग, श्यामू गुप्ता, संतोष जायसवाल, मनोज, राम शब्द सोनू, अवनीश दूबे, अजीत, सरवन, तौलन आदि रहे।

अजूबा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र जहां पानी के लिए तरसते मरीज़ एवं तीमारदार

दैनिक बुद्ध का सन्देश

हर्रैया,बस्ती। जिले के विक्रमजोत विकास खण्ड में एक अजूबा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र जहां पानी के लिए तरसते मरीज़ एवं तीमारदार व स्टाफ। कई महीनों से इंडिया मार्का हैंडपंप व आर ओ व बाहर लगा वाटर प्लांट बना शो पीस यहां पुरानी कहावत चरितार्थ हो रहा है। जैसे अस्पताल बना वनबास दिल्ली से दौलताबाद ट्रांसफार्मर हुई राजधानी यहां करीब पन्द्रह वर्षों से अंगद की तरह पांव जमाकर बैठा एक डाक्टर जो करता है तानाशाही इस डाक्टर आसिफ फारूकी के सामने स्वास्थ्य विभाग के सभी अधिकारियों की नहीं है चलती अन्य अधिकारी बने हुए हैं लाचार वर्षों पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र विक्रमजोत में एम. ओ. पद पर किया था ज्वाइन करीब चार वर्ष पूर्व डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल अधीक्षक का हुआ था तबादला तभी से अधिक्षक पद पर किया है कब्जा जो छावनी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से चलाता है विक्रमजोत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र डाक्टर आसिफ फारुकी हैं तैनात लेकिन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र जितियापुर में करते हैं ओपीडी और रात्रि निवास और रविवार को मुख्यमंत्री स्वास्थ्य मेला में निकल जाते हैं फैजाबाद इसी दिन (जितियापुर) छावनी में डाक्टर अन्नू श्री करती हैं साप्ताहिक ड्यूटी जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी बिक्रमजोत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अधीक्षक डॉ. आसिफ फारूकी के आगे घुटने टेक दिए हैं इसी कारण इस डाक्टर आसिफ फारूकी के तानाशाही रवैया अख्तियार रखने से विभाग और मरीज सभी हैं परेशान किन्तु जिम्मेदारों द्वारा मनबढ़ दबंग इस डाक्टर आसिफ फारूकी के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने से कतराते हैं और डॉ.आसिफ फारूकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र विक्रमजोत और छावनी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र दोनों पर है काबिज जिससे जनता में बढ़ रहा है जनाक्रोश यहां तक ग्रामीणों का कहना है कि किसी प्रसूता महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र विक्रमजोत पर ले जाने पर विक्रम जोत बाजार में स्थित प्रायवेट संचालित अस्पताल पर रेफर कर दिया जाता है उक्त अस्पताल से अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डाक्टर आसिफ फारूकी की है सांठगांठ जहां ग्रामीणों से होता है काफी लूट जिस कारण ग्रामीणों अधीक्षक के प्रति बढ़ता जा रहा जनाक्रोश किन्तु अधीक्षक के ऊपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी बस्ती का हाथ होने के नाते नहीं हो रही है कार्यवाही।

श्रीमती चिनकी आदि बनाम रामजस आदि

(बदस्त बनाम फरोक्त के लिए)

सम्मन बगरज इनफिसाल मुकदमा

(आर्डर–5 कायदा–1 व 5 मजमुआ जाब्ता दीवानी सन् 1980ई0

नम्बर मुकदमा टी–202117630100705/2023

बअदालत उप जिलाधिकारी मुकाम नौगढ़, जिला–सिद्धार्थनगर

श्रीमती चिनकी आदि बनाम रामजस आदि

ता0 पेशी हाजिरी 01.09.2023

धारा–116(1), उत्तर प्रदेश राजस्व संहिता–2006

सम्बन्धित मामला ग्राम–धोबहा, तप्पा–हांटा, परगना–बांसी पूरब, तहसील–नौगढ़, जनपद–सिद्धार्थनगर।

सम्मन बनाम विपक्षीगण

1. धनराज पुत्र अधारे
2. मोहर पुत्र शिवदत्त
3. पल्टू पुत्र हरिहर दत्त
4. गोली पुत्र बाले
5. बबुनी पत्नी तुलसी
6. सर्वजीत पुत्र चिनकान
7. रामजीत पुत्र चिनकान
8. बुधई पुत्र चिनकान
9. विनोद पुत्र अधारे
10. नेवास पुत्र बाले
11. चुल्हई पुत्र बाले
12. मंजीत पुत्र श्रीधर, ग्राम–निवासी–बलुआ, तप्पा–कोड़री, परगना बांसी पूरब, तहसील–नौगढ़, सिद्धार्थनगर।

उपरोक्त समस्त प्रतिवादीगण 01 ता 11 सम्बन्धित ग्राम निवासी ग्राम–धोबहा, तप्पा–हांटा, परगना–बांसी पूरब, तहसील–नौगढ़, जनपद– सिद्धार्थनगर। के निवासी है।

बाजेह हो कि इबारत अली ने आपके नाम एक नालिष बावत दायर की है, लिहाजा, आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 01 माह 09 सन् 2023 हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल अमूर मुत्तलिका मुकदमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जवाब ऐसे सवालात् का दे सके, हाजिर होवें और जवाबदेही दावा देवें और हरगाह वही तारीख को आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इस इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है, पर आपको लाजिम है कि उस रोज उसके जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जवाबदेही में ताईद इस्तेमाल करना चाहते हों, उसी रोज पेश कीजिए। और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर बतारीख 01 माह 09 ई0 2023 को बअदालत उप जिलाधिकारी मुकाम नौगढ़, सिद्धार्थनगर के न्यायालय में सुबह 10 बजे आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमूआ और फैसला होगा।बरवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज तारीख– 23–08–2023ई0 जारी किया गया।

इत्तिला

न्यायालय उप जिलाधिकारी/सहायक कलेक्टर मुहर अदालत,

नौगढ़,जनपद–सिद्धार्थनगर।

सम्पादकीय

लेकिन कांग्रेस के लिए फायदे की बात यह है कि गुजरात से यात्रा शुरू होकर मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ से गुजरेगी। इन दोनों राज्यों में नवंबर में विधानसभा का चुनाव है। अगर राहुल गांधी पैदल चलते हुए इन दोनों राज्यों से गुजरते हैं तो कांग्रेस काडर से लेकर मतदाताओं तक पर इसका असर होगा। हालांकि पिछली बार भी राहुल मध्य प्रदेश से गुजरे ...

राहुल की दूसरी यात्रा का सस्पेंस

कांग्रेस नेता राहुल गांधी की दूसरी भारत जोड़ो यात्रा का सस्पेंस बढ़ता जा रहा है। अभी तक सिर्फ सूत्रों के हवाले से कहा जा रहा है कि राहुल दो अक्टूबर से दूसरी यात्रा शुरू कर सकते हैं। इस बार यात्रा गुजरात में महात्मा गांधी की जन्मस्थली पोरबंदर से शुरू होगी और अरुणाचल प्रदेश या मेघालय तक जाएगी। पिछली बार राहुल ने दक्षिण से उत्तर की यात्रा की थी और साढ़े तीन हजार किलोमीटर पैदल चले थे। इस बार पश्चिम से पूरब की यात्रा करने वाले हैं। लेकिन अभी तक कांग्रेस ने आधिकारिक रूप से इस यात्रा की घोषणा नहीं की है। कहा जा रहा है कि राहुल के लेह–लद्दाख की यात्रा से लौटने के बाद घोषणा हो सकती है। अगर दो अक्टूबर से यात्रा शुरू होने वाली है तो उसके लिए बहुत कम समय रह गया है। हालांकि कांग्रेस के जानकार सूत्रों का कहना है कि यात्रा की तैयारी चल रही है। यह भी कहा जा रहा है कि इस बार पिछली बार की तरह ज्यादा तैयारी करने की जरूरत नहीं है क्योंकि पिछली यात्रा के समय ही कांग्रेस ने यात्रा के लिए और यात्रियों के ठहरने के लिए कंटेनर खरीद लिए थे। उनको बिल्कुल तैयार स्थिति में रखा गया है। जरूरत की सारी चीजें कांग्रेस के पास हैं। सिर्फ यात्रा का रूट तय करना है, भारत यात्रियों के नाम तय करने हैं और समन्वय की टीम बनानी है। संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल और संचार विभाग के प्रमुख जयराम रमेश इस बार भी मुख्य भूमिका में होंगे। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय

सिंह को लेकर संदेह है क्योंकि उनके राज्य में विधानसभा चुनाव होने हैं और वे पार्टी के मुख्य रणनीतिकार और प्रचारक भी हैं। बहरहाल, राहुल की दूसरी यात्रा को लेकर कांग्रेस की एक मुख्य चिंता यह है कि दूसरी यात्रा ज्यादातर ऐसे राज्यों से गुजरेगी, जहां कांग्रेस की सहयोगी पार्टियों का वर्चस्व है। पहली यात्रा में राहुल या तो दक्षिण भारत के राज्यों से गुजरे थे या ऐसे राज्यों से गुजरे थे, जहां कांग्रेस मजबूत है। पश्चिम से पूरब की यात्रा में ऐसा नहीं है। इस रूट में पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार और पूर्वोत्तर के राज्य आएंगे, जहां कांग्रेस का संगठन बहुत मजबूत नहीं है। सो, इन राज्यों की तैयारियों पर ध्यान देना होगा। लेकिन कांग्रेस के लिए फायदे की बात यह है कि गुजरात से यात्रा शुरू होकर मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ से गुजरेगी। इन दोनों राज्यों में नवंबर में विधानसभा का चुनाव है। अगर राहुल गांधी पैदल चलते हुए इन दोनों राज्यों से गुजरते हैं तो कांग्रेस काडर से लेकर मतदाताओं तक पर इसका असर होगा। हालांकि पिछली बार भी राहुल मध्य प्रदेश से गुजरे थे लेकिन चुनाव की वजह से इस बार ज्यादा महत्व होगा। पिछली बार वे छत्तीसगढ़ नहीं गए थे। इस बार उनकी यात्रा छत्तीसगढ़ से भी गुजरेगी। बहरहाल, पांच राज्यों– राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम के चुनाव और अगले साल के लोकसभा चुनाव को देखते हुए कांग्रेस के कई नेता इस समय यात्रा के पक्ष में नहीं हैं। उनका कहना है कि राहुल गांधी को चुनावी रणनीति और प्रचार पर ध्यान देना चाहिए।

जन्मदिन वाला दिवस भी तय करता है आपका भविष्य

आदमी का जन्म दिन भी व्यक्ति के भविष्य का निर्धारण करते हैं। रविवार के दिन जिस जातक का जन्म होता है वह जातक दान देने वाला होता है। इस दिन जन्म लेने वाली स्त्रियां भी दानी प्रवृत्ति की होती हैं। इसके साथ ही शूर वीर , युद्ध में चतुर वित्त स्वभाव वाला होता है। सोमवार के दिन जन्म लेने वाला मनुष्य शांत प्र. ति का होता है। इसके साथ ही वह राजसी प्रवृत्ति और ज्ञानी लोगों का सानिध्य प्राप्त करने वाला भी होता है। मंगलवार के दिन जन्म हुआ व्यक्ति सेनानायक , कपट नीति वाला और विद्वान होता है। समाज में उसे यश और कीर्ति प्राप्त होती है। बुधवार के दिन जन्म लेने वाला मनुष्य पंडित, धनवान, चित्रादि लिपि कर्म करने करने वाला और लेखन कला में कुशल होता है। वह कवि, लेखक और पत्रकारिता के क्षेत्र में किस्मत आजमा सकता है। गुरुवार के दिन विद्वान, मंत्री, सम्पूर्ण गुणों से युक्त और सभी को शिक्षा देने वाला होता है। वह यशस्वी और वैभव युक्त होता है। शुक्रवार के दिन जन्म लेने वाले व्यक्तियों में न्यायाधीश वाली प्रवृत्ति होती है अथवा वे खुद न्यायाधीश होते हैं। उनमें इंसाफ करने वाली प्रवृत्ति होती है। इसके साथ ही ये चपल वृद्धि और नास्तिक बुद्धि के भी होते हैं। स्त्रियों पर मां संतोषी की बहुत .पा होती है। शनिवार के दिन क्रूर स्वभाव वाला दुःखी प्रिय बात करने वाला पराक्रमी और नीचे .ष्टि करने वाला होता है। वह किसी को भी नीचा दिखाने में माहिर होता है। मनुष्य के लिखे हुए भाग्य को देवाधि देव महादेव ही बदल सकते हैं। भगवान भोलेनाथ की पूजा कर किसी भी दिन जन्म लेने वाला मनुष्य अपने भाग्य को चमका सकता है। हर हर महादेव।

लेखक विनय कांत मिश्र/
दैनिक बुद्ध का सन्देश

मध्य प्रदेश में भाजपा ने अपनाई कांग्रेस की रणनीति

ध्यान रहे पिछली बार 2018 में जब भाजपा हारी थी तब उसके वोट कांग्रेस से ज्यादा थे और उसकी सीटों में कांग्रेस से सिर्फ पांच कम थीं। कांग्रेस को 114 और भाजपा को 109 सीटें मिली थीं, जबकि भाजपा का वोट 41.02 फीसदी था और कांग्रेस का वोट 40.89 फीसदी था। सोचें, 15 साल राज करने के बाद जब भाजपा हारी तो उसका सिर्फ 3.86 फीसदी वोट कम हुआ। वह जीतने वाली पार्टी से वोट प्रतिशत में ...

हरिशंकर व्यास

लगता है कि कांग्रेस खुद ही अपनी रणनीति भूल गई है या किसी नई योजना के चक्कर में कर्नाटक की जीत का फॉर्मूला छोड़ रही है। कांग्रेस ने कर्नाटक में एक रणनीति बनाई थी, जिसमें उसने सबसे पहले अपनी कमजोर सीटों की पहचान की थी। ऐसी सीटों की, जहां पार्टी कई चुनाव से हार रही थी या जिन सीटों पर कांग्रेस का सामाजिक समीकरण बहुत अच्छा नहीं था। उन सीटों पर पार्टी ने सबसे ज्यादा मेहनत की। सबसे पहले उन्हीं सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा हुई। वह रणनीति काफी सफल रही। कांग्रेस कर्नाटक में ऐसी कई सीटों पर जीती जो पारंपरिक रूप से कमजोर मानी जाती थी। अपनी इस रणनीति से कांग्रेस ने उत्तरी व तटीय कर्नाटक में भाजपा के गढ़ में तो ओल्ड मैसुरू के इलाके में एचडी देवगौड़ा के गढ़ में सेंध मारी की। सो, हिसाब से कांग्रेस को इसी रणनीति को आजमाना था लेकिन ऐसा लग रहा है कि कांग्रेस की बजाय भाजपा इस फॉर्मूले पर काम कर रही है। भाजपा ने मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में एक दर्जन सर्वे कराए हैं और पहले कमजोर सीटों व कमजोर उम्मीदवारों की पहचान कराई। इसके बाद सबसे कमजोर सीटों पर पार्टी ने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी। सोचें, अभी चुनाव की घोषणा नहीं हुई है। तभी जब चुनाव की घोषणा से पहले ही भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक हुई, तो सबको हैरानी हुई। कयास लगाए गए कि चुनाव तैयारियों के लिए बैठक हुई है। लेकिन बैठक के अगले दिन भाजपा ने मध्य प्रदेश की 39 और छत्तीसगढ़ की 21 सीटों के लिए उम्मीदवारों की घोषणा कर दी। ये सभी कमजोर सीटें हैं। भाजपा ने अपनी हारी हुई सीटों पर सबसे पहले उम्मीदवारों की घोषणा की है। ताकी उनको चुनाव की तैयारी करने का ज्यादा समय मिले और पार्टी के राष्ट्रीय नेता भी उनके लिए समय निकाल सकें। भाजपा ने कमजोर सीटों पर कितनी बारीकी से काम किया है इसकी सबसे अच्छी मिसाल मध्य प्रदेश की गोहद विधानसभा सीट है, जहां 2018 में भाजपा के लाल सिंह आर्य लड़े थे और चुनाव हार गए थे। इस सीट से जीते कांग्रेस के विधायक रणवीर जाटव बाद में पाला बदल कर ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ भाजपा में चले गए। भाजपा ने उपचुनाव में उनको टिकट दिया लेकिन वे हार गए। उपचुनाव में हारने वाले इक्का–दुक्का उम्मीदवारों में से वे भी थे। तभी इस बार सिंधिया के तमाम सद्भाव के बावजूद भाजपा ने उनकी टिकट काट दी क्योंकि उसका आकलन था कि जब राज्य में सरकार बनने के बाद उपचुनाव में वे नहीं जीते तो इस बार नहीं जीतेंगे। उनकी टिकट काट कर भाजपा ने अपने 2018 में चुनाव लड़े अपने पुराने नेता और अनसूचित जाति मोर्चा के लाल सिंह आर्य को टिकट दिया। इस तरह भाजपा ने साफ मैसेज किया कि किसी के प्रति निष्ठा के नाम पर टिकट नहीं मिलने वाली है।

भाजपा ने अपने सर्वेक्षणों के आधार पर सीटों की चार श्रेणी बनाई है, जिसमें ए से डी श्रेणी तक की सीटें हैं। उसने टिकट का बंटवारा डी श्रेणी की सीटों से किया है। अगर भाजपा द्वारा घोषित सीटों को ध्यान से देखें तो कई में साफ दिखेगा कि उसने कांग्रेस की मजबूत सीटों को सबसे पहले टारगेट किया है। मध्य प्रदेश की 39 सीटों में से कांग्रेस के दिग्गज नेताओं की सीटें ज्यादा हैं। भाजपा ने कांग्रेस के मुख्य रणनीतिकार दिग्विजय सिंह के भाई लक्ष्मण सिंह की सीट पर उम्मीदवार घोषित कर दिया है। कांग्रेस के दिग्गज और प्रदेश चुनाव समिति के अध्यक्ष बनाए गए कांतिलाल भूरिया की सीट पर भी भाजपा ने उम्मीदवार घोषित कर दिया है। इनके अलावा जीतू पटवारी, विजय लक्ष्मी साधो, केपी सिंह, सुरेंद्र सिंह बघेल, अरिफ अकील, सचिन यादव आदि की सीट पर भी उम्मीदवारों की घोषणा हो गई है। इस तरह भाजपा ने मध्य प्रदेश में कांग्रेस के बड़े नेताओं की घेराबंदी का दांव चला है। भाजपा ने आरक्षित सीटों पर जल्दी उम्मीदवार घोषित करने की रणनीति भी अपनाई है। मध्य प्रदेश में जिन 39 सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा हुई है उनमें से 21 सीटें आरक्षित श्रेणी की हैं। भाजपा ने अनुसूचित जाति की आठ और जनजाति की 13 सीटों के लिए उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं। भाजपा 2013 के चुनाव में इन 39 में से 29 विधानसभा सीटों पर जीती थी लेकिन 2018 में सभी सीटों पर हार गई। पार्टी को अंदाजा है कि 2013 की जीत नरेंद्र मोदी के नाम पर हुई थी, जिनको विधानसभा चुनावों से कुछ दिन पहले ही प्रधानमंत्री पद का दावेदार घोषित किया गया था। इसलिए इन सीटों को पार्टी अपनी मजबूत सीट नहीं मान रही है। तभी पहले दौर में इन पर उम्मीदवार घोषित किए गए। भाजपा को लग रहा है कि अगर इनमें से कुछ भी सीट जीत गए तो वह बोनस है।

ध्यान रहे पिछली बार 2018 में जब भाजपा हारी थी तब उसके वोट कांग्रेस से ज्यादा थे और उसकी सीटों में कांग्रेस से सिर्फ पांच कम थीं। कांग्रेस को 114 और भाजपा को 109 सीटें मिली थीं, जबकि भाजपा का वोट 41.02 फीसदी था और कांग्रेस का वोट 40.89 फीसदी था। सोचें, 15 साल राज करने के बाद जब भाजपा हारी तो उसका सिर्फ 3.86 फीसदी वोट कम हुआ। वह जीतने वाली पार्टी से वोट प्रतिशत में आगे रही थी। इस हकीकत को ध्यान में रख कर कांग्रेस को अपनी रणनीति बनानी चाहिए थी लेकिन वह अति आत्मविश्वास में दिख रही है और यह उसके लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

लेकिन राजीव जी की यात्रा पर तो पूर्ण विराम लग चुका था। मेरे पिता चार बरस पहले गुजर चुके थे। वह 1991 के मई महीने का चौथा बुधवार था, जब मैं ने मां को फोन किया। पिछली रात राजीव जी की हत्या हुई थी। मां की आवाज भारी थी। उन्होंने न कभी नेहरू जी को देखा था, न शास्त्री जी को, न इंदिरा जी को, न राजीव जी को। उन के लिए इतना ही काफी था कि वे हमारे देश के प्रधानमंत्री हैं...

यादों की बूंदों से झांकते सवाल

पंकज शर्मा

तब सब अपने आप होता था। बिना किसी के कहे हम तिरंगा लहराते थे। बिना किसी के थोपे हम अपने फर्ज निभाते थे। सोचता हूं, आज हमारे स्वाभाविक–भावों के लिए भी आयोजन–प्रबंधन तकनीकों के इतने उत्प्रेरक क्यों इस्तेमाल किए जाते हैं क्या हम वैसे नहीं रहे या, क्या हमारे प्रेरणा–व्यक्तित्व वैसे नहीं रहे जन–मन की नैसर्गिक तरंगों को बाजारू–आवरणों की जरूरत क्यों पडने लगी है मैं बचपन में अपने दादा–दादी और नाना–नानी के घर बहुत रहा। दादा–दादी के गांव में तब 50–60 कच्चे मकान हुआ करते थे और नाना–नानी के छोटे–से कस्बे की आबादी डेढ़–दो हजार हुआ करती होगी। मेरी मां बताती थीं कि जिस शाम महात्मा गांधी की हत्या हुई, पड़ोस में ही रहने वाली उन की एक सहेली की शादी थी। बैलगाडियों से बाराती दो दिन पहले ही आ गए थे। तब बारातें लड़की वालों के यहां तीन से पांच दिन तक ठहरा करती थीं। चूंकि सर्दियों के दिन थे, घुड़चढ़ी वाली शाम अंधेरा जल्दी हो गया था। उत्तरप्रदेश के अपने ननिहाल में जब मैं रहा करता था, तब भी हर शाम पूरे कस्बे में खंभों पर बने दीप–बक्सों में मिट्टी के तेल की चिमनी जला कर रखने के लिए सरकारी लोग आया करते थे तो आजादी मिलने के चार–पांच महीने के भीतर हालात क्या रहे होंगे, अंदाज लगा लीजिए। शाम का झुटपुटा होते ही बारात चल पड़ी थी। रास्ते में थी कि गांधी जी को गोली मार देने की खब्बर आ गई। मां बताती थीं कि दूल्हा, बिना किसी के कहे, घोड़ी से नीचे उतर गया और पैदल विवाह–मंडप में पहुंचा। बैंड वालों ने, बिना किसी के कहे, संगीत बजाना बंद कर दिया। साथ चल रहे रोशनी के चार–छह हंडे वालों ने, बिना किसी के कहे, उन्हें बुझा दिया। आसपास के घरों में जल रही टिमटिमाती रोशनियों और दीप स्तंभों के चिमनियों की मद्धम लौ के बीच बारात खघमोशी से लड़की के घर पहुंची। बड़ी–बूढियों ने, बिना किसी के कहे, बेहद धीमे सुरों में सोहर के गीत गाने की रस्म अदा की। पंडित जी ने, बिना किसी के कहे, दबी आवाज में श्लोक पढ़े और अग्नि के समक्ष सात फेरे कराए। बारातियों ने, बिना किसी के कहे, कह दिया कि भोजन में बनी मिठाई और दही–बूरा उन्हें न परोसा जाए। शुभ–कार्य में कच्चा खाना नहीं बनता है, सो, नहीं बना था, इसलिए एकाध पूड़ी–कचौड़ी खा कर बाराती जनवासे में लौट गए। पांच दिनों के लिए आई बारात, एक दिन पहले ही, अगले दिन दुल्हन की धूमधामविहीन विदाई करा कर लौट गई। उस दिन गांधी जी का अंतिम संस्कार था। इस प्रतीक–प्रसंग की, बिना किसी फरमान के, अखिल भारतीय व्यापकता का अहसास हम आज भी कर सकते हैं। इस के 16 साल बाद, 1964 में मई महीने के आखिरी बुधवार के अपराह्न मैं ने रेडियो पर समाचार सुनते अपने पिता का चेहरा एकदम फक्क होते देखा। वे फफक कर रोने लगे। मेरी मां से जैसे–तैसे बोले कि नेहरू जी नहीं रहे। मैं बहुत छोटा था, लेकिन इतना जानता था कि जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री थे। यह भी कि वे चाचा नेहरू थे। चाचा नहीं रहे, यानी पिता के भाई नहीं रहे। मुझे अपने पिता के आंसुओं और नेहरू के निधन में तब बस यही नाता समझ में आया।

मेरे पिता मध्यप्रदेश के दूरवर्ती आदिवासी इलाके के एक छोटे–से ब्लॉक में पदस्थ थे। कवेलू की छत वाले एक अधपक्के घर में हम रहा करते थे। उस शाम मां ने, बिना किसी के कहे, चूल्हा नहीं जलाया। हम बच्चों को सुबह के बचे खाने में से थोड़ा–थोड़ा खिला कर सुला दिया। अगले दिन पिता दिन भर नम आंखें पोंछते रेडियो पर नेहरू जी के अंतिम संस्कार का आंखों देखा हाल सुनते रहे। घर में चूल्हा उस दिन भी नहीं जला। नेहरू की अंतिम विदाई के बाद पास के आदिवासी छात्रावास के बच्चे अपने बनाए भोजन में से आग्रहपूर्वक कुछ हमारे यहां दे गए। उन्होंने भी, बिना किसी के कहे, डेढ़ दिन बाद चूल्हा जलाया था। तकरीबन ऐसे ही दृश्य की छुअन मेरी टुकुर–टुकुर आंखों ने 19 महीने बाद लालबहादुर शास्त्री के निधन पर महसूस की। मैं न बहुत छोटा था, न बड़ा, सो, तब समझ ही नहीं पाता था कि इस आदिवासी गांव के लोग, जो कभी दिल्ली तो क्या, अपने जिघ्ला मुख्यालय तक नहीं गए, जिन्होंने कभी नेहरू–शास्त्री को देखा तक नहीं, वे उन के निधन पर क्यों कर इतने शोकाकुल हैं, जैसे कोई नजदीकी परिजन चला गया हो बहुत बाद में समझ आया कि वे कैसे निस्पृह नैतिक–नातों का वक्ध्त था। मेरे माता–पिता धर्म–परायण थे। मां तो इतनी कि उन का सारा जीवन तीज–त्यौहारों, एकादशियों, सीतलामाता, शिवरात्रि, जन्माष्टमी, होली, दीवाली के व्रत करते ही बीता। माता–पिता सोमवार का व्रत भी करते थे। लेकिन यह एकमात्र ऐसा व्रत था, जिस के पीछे कोई धार्मिक कारण नहीं था। 1965 के भारत–पाक युद्ध के समय अन्न–संकट से निपटने के लिए शास्त्री जी ने देशवासियों से सप्ताह में एक दिन का व्रत रखने का आग्रह किया था। मेरे माता–पिता ने सोमवार को व्रत रखना शुरू कर दिया। युद्ध समाप्त हो गया। भारत अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। हरित क्रांति हो गई। श्वेत क्रांति हो गई। उदारीकरण के बाद भारत बदल गया। मगर मां और पिता का सोमवार–व्रत, बिना किसी के कहे, ताजिध्दगी जारी रहा। उन का चूल्हा शास्त्री जी के निधन के दिन भी नहीं जला। 31 अक्टूबर 1984 को इंदिरा गांधी की हत्या वाले दिन मैं दिल्ली में था। तब तक मैं नवभारत टाइम्स में आ गया था। माता–पिता से दूर। नवभारत टाइम्स ने पश्चिमी उत्तरप्रदेश का अलग संस्करण शुरू करने के लिए मेरठ में उस का क्षेत्रीय कार्यालय बनाया था। मैं पहला प्रभारी था। दिल्ली से मेरठ जा रहे मेरे कार्यालयीन वाहन का ड्राइवर एक नौजवान सिख था। मोदीनगर में हमारी गाड़ी को उग्र भीड़ ने रोक लिया। वे ड्राइवर को खांचे कर बाहर निकालने लगे। मैं ने भीड़ को समझाने की कोशिश की। जैसे–तैसे गाड़ी भगाई। रात को माता–पिता को फोन किया तो मालूम हुआ कि, बिना किसी के कहे, घर में चूल्हा आज भी नहीं जला है। अगले कई दिन ड्राइवर को अपने घर में छिपा कर रखा। 3 नवंबर को इंदिरा जी का अंतिम संस्कार होने के अगले दिन उसे दिल्ली छोडने गया। इस के पौने सात साल बाद जब राजीव गांधी ही हत्या हुई तो उस यात्रा में मैं जाते–जाते रह गया था। चुनावी दौरा कवर करते हुए एक दिन पहले ही उन के साथ दिल्ली लौटा था। अगले दिन राजीव जी दक्षिण भारत चले गए। उन का हैलीकॉप्टर कैप्टन विजय त्रेहन उड़ाते थे। उन से मैं ने कहा कि अगली यात्रा में फिर साथ चलूंगा।

प्रज्ञानंद की सफलता में मां का है अहम रोल, देश ही नहीं विदेश में भी रखती है हर चीज का खास ध्यान

भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानंद ने फिडे वर्ल्ड कप चेस टूर्नामेंट के फाइनल के पहले गेम में मैग्रस कार्लसन के खिलाफ ड्रॉ खेला। दोनों के बीच शानदार गेम देखने को मिला। 18 साल के भारतीय खिलाड़ी ने वर्ल्ड नंबर 1 कार्लसन को ड्रॉ खेलने पर मजबूर कर दिया। लेकिन इस दौरान प्रज्ञानंद से ज्यादा अगर किसी की चर्चा हुई तो वो हैं उनकी मां। सोशल मीडिया पर उनकी मां की अलग अलग तस्वीर वायरल हो रही है। जिसमें वो अपने बेटे की फैबियानों कारुना पर जीत के बाद आई। हर कोई प्रज्ञानंद की मां की बातें कर रहा है। चेस मास्टर के साथ उनकी मां को भी बधाइयां मिल रही हैं।

कहते हैं कि, हर सफल आदमी के पीछे एक औरत का हाथ होता है। प्रज्ञानंद की सफलता के पीछ भी उनकी मां का हाथ है। मां के कारण ही सफल हुए प्रज्ञानंद : उनके कोच और साथी खिलाड़ी बताते हैं कि, प्रज्ञानंद को महान

खिलाड़ी बनाने में उनकी मां की अहम भूमिका है। चाहे वो उन्हें क्लास के लिए ले जाना हो या फिर घर में उनके अनुकूल माहौल बनाना। इसके अलावा उनकी मां घर से हजारों मील दूर घर का खाना उन्हें खिलाती हैं। नागलक्ष्मी का पूरा जीवन प्रज्ञानंद और उनकी बहन वैशाली को अपने वर्गों में विश्व ग्रैंडमास्टर बनाने में बीता है।

प्रज्ञानंद की मां ने उन्हें खेलने–कूदने की उम्र में शतरंज की दुनिया का बादशाह बना दिया। मां के सपनों को पूरा करने के लिए वह भी 64 मोहरों वाले इस खेल के चाणक्य बन गए। नागलक्ष्मी हर मैच में बेटे के साथ होती हैं। वो अपने बेटे के हर मैच में एक कोने पर बैठकर प्रार्थना करती है। फिर चाहे वो मैच अंतरराष्ट्रीय लेवल को हो या फिर राष्ट्रीय लेवल का, वो बस बैठकर प्रार्थना करती हैं।

एक पुराने इंटरव्यू में नागलक्ष्मी में कहती है कि, प्रज्ञानंद के खेलने वाले अखाड़े इतने शांत होते हैं कि मैं हमेशा डरती हूं कि कहीं लोग मेरी धड़कनों की आवाज सुन ना लें। मैं अपने बेटे से किसी भी गेम के दौरान आंखें नहीं मिलाती, क्योंकि वो नहीं चाहती हैं कि उनका बेटा जाने कि वह क्या महसूस कर रहा है। हालांकि, नागलक्ष्मी को पता होता है कि उनका बेटा कब परेशान है और कब आत्मविश्वास से भरा हुआ है।

प्रज्ञानंद के साथ हमेशा होती हैं मां : प्रज्ञानंद के कोच एस थियागराजन बताते हैं कि, नागलक्ष्मी टूर्नामेंट में आती थीं, एक कोने में बैठ जाती थी और अपने बेटे के खेल खत्म होने तक सिर्फ प्रार्थना करती थीं। कोच आगे बताते हैं कि, वो महज 7 साल का था लेकिन वो हर एक गेम के दौरान प्रार्थना करती थीं। उनके शतरंज कोचिंग की क्लासेस सुबर 10 बजे से शाम 7 बजे तक होती थीं। लेकिन मैं उन्हें उसके बाद तीन–चार घंटे का होमवर्क भी देता था। इस दौरान उनकी मां हमेशा उनके साथ होती थीं।

प्रज्ञानंद और उनकी बहन जब भी टूर्नामेंट के लिए यात्रा करते हैं तो नागलक्ष्मी एक इंडक्शन स्टोव और दो स्टील के बर्तन साथ में ले जाती हैं जिससे उनके बच्चों को घर का खाना मिल सके।

विश्व कप 2023 से पहले न्यूजीलैंड टीम का कोचिंग स्टाफ हुआ मजबूत, ये तीन दिग्गज हुए शामिल

न्यूजीलैंड ने भारत में होने वाले विश्व कप से पहले टीम के कोचिंग स्टाफ में पूर्व कप्तान स्टीफन फ्लेमिंग के साथ इंग्लैंड के इयान बेल और जेम्स फोस्टर को शामिल किया है। फ्लेमिंग और पूर्व विकेटकीपर फोस्टर के पास आईपीएल का अनुभव भी है। फ्लेमिंग एक दशक से अधिक समय से चेन्नई सुपर किंग्स के कोच हैं और महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी वाली टीम को पांच आईपीएल खिताब दिला चुके हैं। वह इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के जरिये कीवी टीम से जुड़ेंगे।

न्यूजीलैंड के मुख्य कोच गैरी स्टीड ने ईएसपीएन क्रिकइन्फो से कहा ,'' फ्लेमिंग का आना टीम के लिये और स्टाफ के लिये भी बहुत अच्छा है।'' उन्होंने कहा ,'' उनके पास भारत में खेलने का अपार अनुभव है और आईपीएल की शुरूआत से चेन्नई टीम के साथ है। उनसे भारत में खेलने को लेकर काफी उपयोगी जानकारी मिलेगी।''

दूसरी ओर फोस्टर कोलकाता नाइट राइडर्स के मौजूदा सहायक कोच हैं। वह दुनिया भर में टी20 लीग में कोचिंग कर चुके हैं।वह इंग्लैंड के खिलाफ वनडे श्रृंखला के जरिये टीम से जुड़ेंगे। इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज बेल इंग्लैंड के खिलाफ इस महीने के आखिर में होने वाली टी20 श्रृंखला के जरिये न्यूजीलैंड टीम से जुडेंगे। वह ल्यूक रोंची की जगह बल्लेबाजी कोच होंगे।

रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने की दिशा में कदम, जी 20 समिट से ठीक पहले जकार्ता क्यों जा रहे पीएम मोदी?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आसियान शिखर सम्मेलन के लिए जकार्ता की यात्रा पर जाने के लिए तैयार हैं। यह यात्रा भारत की श्एक्ट ईस्ट पॉलिसीश के ढांचे के भीतर महत्व रखती है। भारत की विदेश नीति रणनीति की आधारशिला के रूप में काम करने वाली आसियान साझेदारी के साथ, यह जुड़ाव क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने और संबंधों को मजबूत करने के लिए तैयार है। जकार्ता में आसियान–संबंधित शिखर बैठकों में प्रधानमंत्री मोदी की भागीदारी भारत–प्रशांत क्षेत्र में राजनयिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। 6 से 7 सितंबर तक होने वाली यह यात्रा प्रधानमंत्री मोदी की एक साल के भीतर दूसरी इंडोनेशिया यात्रा है।

पिछले साल पीएम मोदी ने आसियान–भारत शिखर सम्मेलन में हिस्सा नहीं लिया था। साल 2022 में आसियान देशों के सभी सदस्यों के विदेश मंत्रियों की विदेश मंत्री एस जयशंकर के साथ बैठक हुई थी। जिसमें आपसी सहयोग के 17 सूत्रीय एजेंडा तो अंतिम रूप दिया गया था। भारत और आसियान के बीच फलते–फूलते व्यापार और निवेश संबंध उनके सहयोग की पारस्परिक रूप से लाभप्रद

प्रकृति का उदाहरण देते हैं। पिछले साल एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हुई जब भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कंबोडिया में भारत–आसियान शिखर सम्मेलन और संबंधित शिखर बैठकों में देश का प्रतिनिधित्व किया। इन बैठकों ने एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत दिया, जिसने इस समूह के साथ भारत के सहयोग को व्यापक रणनीतिक साझेदारी (सीएसपी) के स्तर तक बढ़ा दिया।

इंडोनेशियाई राष्ट्रपति जोको विडोडो 5–7 सितंबर, 2023 तक जकार्ता कन्वेंशन सेंटर में आयोजित 43वें आसियान शिखर सम्मेलन के दौरान कई बैठकों की अध्यक्षता करेंगे। इन बैठकों का एजेंडा व्यापक है और इसमें 43वें आसियान शिखर सम्मेलन के पूर्ण सत्र जैसे सत्र शामिल हैं। 43वां आसियान शिखर सम्मेलन रिट्रीट सत्र, 26वां आसियान–चीन शिखर सम्मेलन। और, 24वें आसियान–दक्षिण कोरिया शिखर सम्मेलन का उद्देश्य गहन क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है, और महत्वपूर्ण आसियान –भारत–प्रशांत फोरम, जिसे गंभीर क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए डिजाइन किया गया है।

भारतीय महिला हॉकी टीम एशियाई हॉकी 5एस वर्ल्ड कप क्वालीफायर के लिए ओमान रवाना

भारतीय महिला हॉकी टीम एशियाई हॉकी 5एस वर्ल्ड कप क्वालीफायर के लिए ओमान रवाना हो गई है। जहां वो शुक्रवार को

मलेशिया के खिलाफ पहला मैच खेलेगी। भारत को एलीट पूल में जापान, मलेशिया और थाईलैंड के साथ रखा गया है। घर से काम द्य विज्ञापन ढूंढे : वहीं चौलेंजर्स पूल में हांगकांग चीन, चीनी ताइपै, इंडोनेशिया, बांग्लादेश, ईरान और ओमान हैं। भारतीय टीम की अगुवाई नवजोत कौर करेंगी। एलीट ग्रुप से शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी।मलेशिया के बाद भारत को शनिवार को जापान से और रविवार को थाईलैंड से खेलना है। भारत की कोच सौंदर्या येंडाला ने टीम की रवानगी से पहले कहा ,'' हमें इस टूर्नामेंट का बेताबी से इंतजार है। इसकी तैयारी के लिये हमने काफी मेहनत की है। हम पूरे टूर्नामेंट में अच्छा खेलना चाहते हैं और उम्मीद है कि हमारी मेहनत रंग लायेगी।'' कप्तान नवजोत ने कहा ,'' हमें पूल में कुछ मजबूत टीमों का सामना करना है लेकिन हम पूरी तैयारी से आये हैं। हमें पदक जीतने का यकीन है।ष

ग्लोबल साउथ की आवाज को मजबूत करने के लिए मिलकर करते रहेंगे काम, सैंडटन कन्वेंशन सेंटर में पीएम मोदी

पीएम मोदी जोहान्सबर्ग में ब्रिक्स पूर्ण सत्र के लिए सैंडटन कन्वेंशन सेंटर पहुंचे। इससे पहले पीएम मोदी दक्षिण अफ्रीका में

ब्रिक्स लीडर्स रिट्रीट में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने पांच देशों के समूह के अन्य नेताओं के साथ वैश्विक घटनाक्रमों पर विचार–विमर्श किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा ने 15वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से इतर जोहान्सबर्ग में द्विपक्षीय बैठक की। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा के साथ द्विपक्षीय बैठक के बाद, पीएम मोदी ने ट्वीट करते हुए कहा कि राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा के साथ एक उत्कृष्ट बैठक हुई। हमने भारत–दक्षिण अफ्रीका संबंधों को गहरा करने के उद्देश्य से कई मुद्दों पर चर्चा की। व्यापार, रक्षा और निवेश संबंधों पर प्रमुखता से चर्चा हुई। हम ग्लोबल साउथ की आवाज को मजबूत करने के लिए भी मिलकर काम करते रहेंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, चीन, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील के अपने समकक्षों के साथ 'लीडर्स रिट्रीट' में शामिल हुए। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ब्रिक्स के वार्षिक शिखर सम्मेलन में शमिल होने के लिए यहां नहीं आए हैं। ब्रिक्स पांच विकासशील देशों का समूह है जो विश्व की 41 प्रतिशत आबादी, 24 प्रतिशत वैश्विक जीडीपी और 16 प्रतिशत वैश्विक कारोबार का प्रतिनिधित्व करता है। अमेरिका को चुनौती देना उद्देश्य नहींः ब्राजील के लूला का कहना है कि ब्रिक्स का उद्देश्य जी7, अमेरिका को चुनौती देना नहीं है। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा ने कहा कि उभरते देशों का ब्रिक्स समूह जी7 या संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे अन्य अंतरराष्ट्रीय गठबंधनों को चुनौती देने के लिए नहीं है, बल्कि तथाकथित ग्लोबल साउथ को ष्संगठितष करने के लिए है। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा ने कहा कि वह चाहते हैं कि अर्जेंटीना उभरते देशों के ब्रिक्स समूह में शामिल हो, क्योंकि ब्राजील का पड़ोसी देश विदेशी भंडार की कमी से जूझ रहा है।

देखते ही देखते कैसे तबाह हो गया न्यूक्लियर सबमरीन? खराब चल रहा है चीन का टाइम

चीन के लिए यह चिंताजनक समय है। उनकी अर्थव्यवस्था बहुत अच्छी नहीं चल रही है, वे तेजी से पश्चिम से अलग–थलग होते जा रहे हैं और अब, ताइवान स्टेट से चीन के लिए एक बुरी खबर सामने आई है। कहा जा रहा है कि चीन की न्यूक्लियर सबमरीन दुर्घटनागस्त हो गई। इस एक्सीडेंट में सबमरीन पूरी तरह तबाह हो गई है। दुर्घटनागस्त में सभी सवार की मौत की भी जानकारी सामने आई है। हालांकि चीन की तरफ से दुर्घटना की कोई पुष्टि नहीं की गई है।

क्या है पूरा मामलाः 22 अगस्त की सुबह सोशल मीडिया उन खबरों से भरा पड़ा था कि टाइप 093 (शांग क्लास) चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी की परमाणु–संचालित हमलावर पनडुब्बी विवादित ताइवान स्ट्रेट के आसपास एक बड़ी दुर्घटना का शिकार हो गई और सात प्रशिक्षुओं सहित जहाज पर सभी सवार अधिकारी की मृत्यु हो गई। हाल ही में रीब्रांड की गई एक्स साइट पर कुछ नेटिजन्स ने यह भी कहा कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के सैन्य आयोग मुख्यालय को 21 अगस्त को पीले सागर क्षेत्र में हुई दुर्घटना के बारे में सूचित किया गया था। /सनकमत्रऋउमकपं के रूप में पहचाने जाने वाले एक एक्स यूजर ने पोस्ट किया कि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग को घटना से अवगत कराया गया था और नेता ने सैन्य आयोग के संयुक्त संचालन कमांड सेंटर से मामले की जांच करने के लिए कहा। हालांकि /lude_media ने बाद में यह भी कहा कि दुर्घटना पीले सागर में हुई थी, न कि ताइवान जलडमरूमध्य में।

क्या कह रहे हैं अधिकारी?: दुर्घटना या जहाज पर सवार चीनी अधिकारियों की मौत की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। इस बारे में पूछे जाने पर ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने भी कहा कि इस खबर की पुष्टि करने के लिए कोई सबूत नहीं है। ताइपे टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, ताइवान के रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता सन ली–फैंग ने कहा कि देश के संयुक्त खुफिया और निगरानी तंत्र को पनडुब्बी दुर्घटना का कोई सबूत नहीं मिला है। चीन–ताइवान संबंधः ताइवान जलडमरूमध्य के आसपास एक चीनी पनडुब्बी की संभावना काफी है क्योंकि चीन ने इस क्षेत्र में गतिविधि बढ़ा दी है। दो दिन पहले ताइवान ने कहा था कि पिछले 24 घंटों में 25 चीनी वायु सेना के विमानों ने ताइवान जलडमरूमध्य की मध्य रेखा को पार किया, क्योंकि बीजिंग द्वीप के चारों ओर सैन्य अभ्यास कर रहा था। चीन ने पिछले शनिवार को ताइवान के आसपास हवाई और समुद्री अभ्यास किया था, जिसमें उसने कहा था कि द्वीप के उपराष्ट्रपति के संयुक्त राज्य अमेरिका के दौरे के बाद यह एक कड़ी चेतावनी थी।

टीवीएस सप्लाई चेन सॉल्यूशंस का शेयर निर्गम मूल्य पर पांच प्रतिशत की बढ़त के साथ सूचीबद्ध

नयी दिल्ली। टीवीएस सप्लाई चेन सॉल्यूशंस लि. का शेयर बुधवार को शेयर बाजारों में अपने निर्गम मूल्य 197 रुपये पर पांच प्रतिशत की बढ़त के साथ सूचीबद्ध हुआ। बीएसई पर कंपनी का शेयर 4.72 प्रतिशत की बढ़त के साथ 206.30 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। बाद में यह 5.83 प्रतिशत की बढ़त के साथ 208.50 रुपये पर पहुंच गया।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर कंपनी का शेयर 5.10 प्रतिशत के लाभ के साथ 207.05 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। बाद में यह 5.88 प्रतिशत की बढ़त के साथ 208.60 रुपये पर कारोबार कर रहा था। सुबह के कारोबार में कंपनी का बाजार मूल्यांकन 8,791.94 करोड़ रुपये था।

टीवीएस सप्लाई चेन सॉल्यूशंस के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को पिछले सप्ताह 2.78 गुना अभिदान मिला था। आईपीओ के लिए मूल्य दायरा 187 से 197 रुपये प्रति शेयर था। टीवीएस सप्लाई चेन सॉल्यूशंस की मौजूदगी 25 से अधिक देशों में है। पूर्ववर्ती टीवीएस ग्रुप द्वारा प्रवर्तित कंपनी अब टीवीएस मोबिलिटी ग्रुप का हिस्सा है।

रेप आरोपी संदीप लामिछाने के बिना एशिया कप के लिए पाकिस्तान रवाना हुई नेपाल टीम

एशिया कप के आगाज में अब बस कुछ ही दिन शेष हैं। इस बीच नेपाल क्रिकेट टीम अपने पहले मुकाबले के लिए पाकिस्तान

के लिए रवाना हो गई है। वहीं इस दौरान नेपाल क्रिकेट टीम के साथ संदीप लामिछाने नजर नहीं आए। दरअसल, कहा जा रहा है कि, कथित रेप केस के कारण वो टीम के साथ नहीं जा पाए। बता दें, 23 वर्षीय संदीप लामिछाने एक समय नेपाल क्रिकेट टीम के कप्तान के साथ पोस्टर बॉय भी थे। लेकिन पिछले साल उन पर एक नाबालिग के साथ रेप करने का आरोप लगा है। हालांकि, वो खुद पर लगे सभी आरोपों से इनकार करते हैं। नेपाल क्रिकेट एसोसिएशन के प्रबंधक प्रदीप मजगैयान ने टीम के रवाना होने से पहले मीडिया से बात करते हुए कहा, ष्संदीप के खिलाफ मामला अदालत में विचाराधीन है, इसलिए वो अब हमारे साथ नहीं जा रहे हैं, उन्हें कुछ स्वास्थ्य समस्याएं भी हैं।ष वहीं लामिछाने को रविवार को मामले की सुनवाई में भाग लेना है। माजगैयन ने कहा कि उम्मीद है कि वो बाद में टूर्नामेंट के लिए टीम में शामिल हो सकेंगे। माजगैयन ने आगे कहा कि, मैच शुरू होने में अभी कुछ समय बाकी है। इसलिए अभी भी संभावना है कि वो बाद में शामिल होंगे। गौरतलब है कि, पिछले साल आरोप लगने के बाद संदीप को नेपाल टीम की कप्तानी से निलंबित कर दिया गया था। वहीं उन्हें काठमांडू एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया था। लेकिन जनवरी में उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया और नेपाल ने उनके खेलने पर बैन भी हटा दिया था।

दो अलग-अलग स्थानों से एक लाख की चोरी

भाटपाररानी। थाना क्षेत्र के अलग–अलग दो गांवों के दो घरों में रात्रि चोर पांच हजार नकदी सहित करीब एक लाख रुपये का सामान उठा ले गए। घटना की जानकारी होने पर परिजनों ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस घटना की छानबीन में जुटी हुई है। पहली घटना भेड़ापाकड़ गांव में हुई है। गांव के बाहर भेड़ापाकड़ चौराहे के पास उर्मिला देवी अपनी दो बेटियों के साथ मकान बनवा कर रहती हैं। उनके पति दीना ठाकुर की पहले ही मृत्यु हो चुकी है। रात मां और बेटियां दोनों घर के अंदर सो रहीं थीं। इसी बीच घर के पीछे से नकब काटकर चोर अंदर घुस गए। जब उन्हें कुछ नहीं मिला तो सो रही उर्मिला देवी के कान की बाली को निकालने लगे। इसी बीच वह जग गईं, लेकिन चोर कान की बाली खींचकर फरार हो गए। दूसरी घटना मठ दामोदरा गांव की है। जहां रात बबीता यादव पत्नी राजेश का परिवार घर में सो रहा था। चोर घर के पीछे का दरवाजा खोल कर अंदर घुस गए और घर में रखा कपड़ा, नथुनी, दो अंगूठी तथा अन्य आभूषण सहित पांच हजार रुपये नकदी उड़ा ले गए। परिवार को सुबह जब इसकी जानकारी हुई तो उनके होश उड़ गए। थानाध्यक्ष तेज जगन्नाथ सिंह ने बताया कि भेड़ापाकड़ में उर्मिला देवी व मठदामोदरा में राहुल यादव की तहरीर पर चोरी का केस दर्ज कर घटना की छानबीन की जा रही है।

युवक पर धारदार हथियार से हमला, कट गई आधी नाक

देवरिया। तरकुलवा थानाक्षेत्र के नरायनपुर गांव में रात मामूली विवाद को लेकर एक युवक पर उसके पट्टीदारों ने धारदार हथियार से हमला कर दिया, जिससे युवक की आधी नाक कट गई और वह गंभीर रूप से घायल हो गया। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस मामले की जांच कर रही है। नरायनपुर गांव के रहने वाले हकीमुल्लाह का उनके पट्टीदारों से जमीनी विवाद है। इसमें गांव के पंचों ने पंचायत कर सुलह करा दिया था। आरोप है कि दूसरा पक्ष पंचायत के फैसले को नहीं मान रहा है। आरोप है कि इस विवाद में 19 अगस्त को युवक के पट्टीदारों ने गोलबंद होकर उसके दरवाजे पर चढ़कर लाठी–डंडे से उसे और उसके परिवारीजनों को मारपीट कर घायल कर दिया। पीड़ित ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की थी। युवक के पुलिस से शिकायत करने से नाराज होकर आरोपियों ने . रात गोलबंद होकर उसपर धारदार हथियार से हमला बोल दिया, जिससे युवक की आधी नाक कट गई और वह गंभीर रूप से घायल हो गया। थाना प्रभारी दिलीप सिंह ने बताया कि तहरीर मिली है, मामले की जांचकर कार्रवाई की जाएगी।

दहेज हत्या की महिला आरोपी गिरफ्तार

देवरिया। तरकुलवा थानाक्षेत्र के पगरा गांव में करीब एक माह पूर्व विवाहिता की मौत के मामले में दहेज हत्या में वांछित आरोपी सास मोतीरानी देवी को पुलिस ने गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से न्यायालय ने उसे जेल भेज दिया। इस मामले में मृतका के पति को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। पगरा गांव निवासी छोटेलाल प्रजापति की पत्नी कुमकुम प्रजाति का शव 23 जुलाई की शाम को छत की कुंडी से लटकता हुआ मिला था। मृतका की मां ने पुलिस को तहरीर देकर ससुरालियों पर दहेज के लिए बेटी की हत्या कर शव को कुंडी से लटकाने का आरोप लगाया था। इस मामले में पुलिस ने मृतका के पति, सास समेत आठ लोगों के खिलाफ दहेज हत्या का केस दर्ज किया था। जिसमें पुलिस ने आरोपी सास मोतीरानी देवी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

दायित्वों के प्रति लापरवाही पर तीन सफाईकर्मी निलंबित

महराजगंज। दायित्वों के प्रति लापरवाही व तैनाती वाले ग्राम पंचायतों में सफाई न करने का दोषी पाए जाने पर जिला पंचायत राज अधिकारी ने तीन सफाईकर्मियों को निलंबित कर दिया। निलंबन अवधि में सभी सफाईकर्मी संबंधित ब्लॉक के सहायक विकास अधिकारी पंचायत कार्यालय संबद्ध रहेंगे। मामले की जांच सहायक विकास अधिकारी को सौंपी गई है। फरेंदा ब्लॉक के ग्राम उदितपुर में तैनात सफाईकर्मी श्याम नरायन पासवान व अशोक कुमार पर आरोप था कि उनकी ओर से गांव में सफाई कार्य में रुचि नहीं ली जाती है। वे पंचायत भवन, विद्यालय व अन्य सार्वजनिक स्थलों के साथ ही गांव में सफाई नहीं करते हैं, जिससे लोगों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। प्राथमिक जांच में दोनों सफाईकर्मी दोषी पाए गए। जिस पर उन्हें निलंबित करते हुए फरेंदा के सहायक विकास अधिकारी पंचायत कार्यालय से संबद्ध किया गया है। उनकी जांच सहायक विकास अधिकारी बृजमनगंज को सौंपी गई है। वहीं निचलौल ब्लॉक के ग्राम टिकुलहिया में कार्यों के प्रति लापरवाह सफाईकर्मी उषा देवी को निलंबित कर उन्हें निचलौल के सहायक विकास अधिकारी कार्यालय से संबद्ध किया है। उनकी जांच सहायक विकास अधिकारी मिठौरा को सौंपी गई है।

पत्नी ने नहीं किया धर्म परिवर्तन तो मारपीट कर घर से निकाला

महराजगंज। सिंदुरिया थाना क्षेत्र के मिठौरा निवासी एक व्यक्ति ने पत्नी को धर्म बदल ईसाई बनने के लिए पहले दबाव बनाया। विरोध करने पर उसने पत्नी को बेरहमी से पीटकर घर से निकाल दिया। बीते रविवार को आरोपी पति अंगद की कलई खुलने के बाद पीड़ित पत्नी किरन ने पुलिस से शिकायत कर न्याय की गुहार लगाई है। पीड़िता किरन बुजुर्ग मां और मासूम बेटे के साथ निचलौल थाने में पहुंचकर पुलिस से बताया है कि वर्ष 2015 में उनकी शादी मिठौरा गांव के रहने वाले अंगद के साथ हिंदू रीति रिवाज से हुई थी। शादी के बाद करीब एक वर्ष तक सब कुछ ठीक था। कुछ ही दिन बाद से पति अंगद का व्यवहार बदलने लगा। वह धर्म बदल ईसाई बनने के लिए उन पर दबाव बनाने लगा। विरोध करने पर पति ने पिटाई कर उसे घर से निकाल दिया। इसके बाद वह निचलौल क्षेत्र के गांव लेदी स्थित मायके चली आई। पीड़िता ने बताया कि उसके दो बच्चे हैं। बड़ी बेटी को पति ने जबरन अपने पास रख लिया है। जबकि छोटा बेटा उनके पास रहता है। निचलौल थाना प्रभारी उपनिरीक्षक प्रधान यादव ने कहा कि मामले में तहरीर मिली है। आगे कार्रवाई की जा रही है। फिलहाल जेल में है आरोप पतिः निचलौल थाना क्षेत्र के मदनपुरा गांव में एक चाय की दुकान पर बीते रविवार को धर्म बदलने की बात को लेकर एक युवक के साथ आरोपी पति ने मारपीट की थी। जिस मामले में निचलौल पुलिस अंगद कुमार निषाद के खिलाफ संबंधित धाराओं में कार्रवाई कर गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को किया गया पुरस्कृत

देवरिया। नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से आयोजित तुलसी जयंती समारोह का समापन हुआ। इसके पूर्व इस दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि मधुकर उपाध्याय ने कहा कि उनके निर्माण में अयोध्या का जितना योगदान रहा है, उतना ही अवधी भाषा का भी। मुझे गर्व है कि तुलसीदास जी ने रामायण अवधि में लिखी। आगे कहा कि अब तक तुलसीदास का कलात्मक पक्ष अव्याख्यायित है। उस पर अध्ययन की जरूरत है। तुलसीदास की अवधी केवल अवधी नहीं है उसमे फारसी से पहले पहलवी है, अरबी भाषा के लगभग ग्यारह सौ शब्द हैं, फिर तमिल है, तेलुगू है, कन्नड़ है। जो लय शब्द आज रिदम के अर्थ में प्रयुक्त होता है वह पुरानी अवधी में सत्यानाश के रूप में जाने जाते थे और मानस में उसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। यदि आप रामचरित मानस का पठन किसी इच्छा से करते हैं तो वह निष्फल होगा, मानस का अध्ययन ज्ञान की दृष्टि से होना चाहिए। विशिष्ट अतिथि आंजनेय दास ने कहा कि तुलसीदास का साहित्य से हमें निरंतर प्रेरणा देता है। बीआरडी पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शरत चंद्र मिश्र ने कहा कि तुलसी दास जी भारतीय मनीषा के श्रेष्ठ कवि हैं। संपूर्ण भारतीय साहित्य उनका ऋणी है। नाना प्रकार के कष्ट सहते हुए उन्होंने समाज को नयी दिशा दी। पूरे मध्यकाल के वे अकेले कवि हैं जो नारी के प्रति भी संवेदनशील हैं। अध्यक्षता संस्था अध्यक्ष आचार्य परमेश्वर जोशी व संचालन डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी ने किया। इस दौरान संस्था मंत्री डॉ. अनिल कुमार त्रिपाठी, अखिलेश जायसवाल, वंदना गुप्ता, शीला चतुर्वेदी, आचार्य प्रमोद मणि त्रिपाठी, डॉ. शकुंतला दीक्षित, डॉ. राजेश मिश्र, डॉ. सुधाशु शुक्ल, सरोज पांडेय, वृद्धिचन्द्र विश्वकर्मा आदि मौजूद रहे।

जलभराव से राहगीर परेशान, धरना–प्रदर्शन की चेतावनी

देवरिया। तरकुलवा थानाक्षेत्र के बंजरिया बाजार की मुख्य सड़क पर जलभराव से राहगीरों को परेशानी हो रही है। जलनिकासी के लिए नाली न होने से सड़क पर गंदा पानी बहता रहता है, जिससे सड़क टूटकर गड्ढे में तब्दील हो गई है।

वहीं हल्की बारिश होने पर मुख्य सड़क का नजारा तालाब जैसा हो जाता है। बंजरिया बाजार की मुख्य सड़क देवरिया और कुशीनगर जनपदों को ग्रामीण इलाकों से जोड़ती है। इसकी दशा बेहद खराब है। इससे बंजरिया, शेखपुरा, पोखरभिंडा, बाबूपट्टी, बरईपट्टी, पगरा, सकतुआ, खैराट, कौलाचक आदि गांवों के अलावा कुशीनगर जनपद के सोनबरसा, जौरा बाजार, रहसू, कनौरा, लक्ष्मीपुर, धौरहरा आदि गांवों के बड़ी संख्या में राहगीरों का इस रास्ते से आना–जाना होता है। बंजरिया के ग्राम प्रधान अबूसलाम ने बताया कि कई बार पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों से सड़क को दुरुस्त कराने की मांग की गई, लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया है। बंजरिया गांव शंकर सिंह ने बताया कि जनप्रतिनिधियों को सड़क के गड्ढे नही दिखाई देते हैं, वे केवल चुनाव के समय लोगों की सुधि लेते हैं। पूर्व प्रधान मैनेजर खां, विवेक सिंह पटेल, सद्दाम हुसैन, मैनेजर पाण्डेय, धरुवदेव सिंह, अच्छेलाल भारती, अशोक कुमार, महबूब खां, जमशेद खां, मंजर हुसैन, रफीक खां, नन्हें गुप्ता आदि ने यथाशीघ्र पानी निकास की व्यवस्था व सड़क को दुरुस्त कराने की मांग की है। लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगें पूरी नहीं हुईं तो वे धरना प्रदर्शन के लिए बाध्य होंगे।

लापरवाही बरतने वाले के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें : सीडीओ

देवरिया। उद्योग केंद्र परिसर में सीसी रोड, नाली निर्माण कार्यों का मुख्य विकास अधिकारी रवींद्र कुमार ने निरीक्षण किया। इसमें कमियां मिलने पर उसे ठीक कराने का निर्देश दिया। जबकि लापरवाही बरतने वाले के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का पीडब्लूडी के अधिशासी अभियंता को निर्देश दिया। मुख्य नाला जाम होने पर नाराजगी जताई और नगर पालिका के ईओ को सफाई कराने का निर्देश दिया। उद्योग केंद्र परिसर में 1250 मीटर में सीसी रोड एवं पांच सौ मीटर नाली का निर्माण कराया जाना है। परियोजना पर 195.85 लाख रुपये की स्वीकृत करते हुए धनराशि कार्यदायी संस्था को अवमुक्त कर दी गई है। अवर अभियंता ने बताया गया कि 1250 मीटर में सीसी रोड एवं 477 मीटर नाली एवं 512 मीटर नाली मरम्मत का कार्य पूरा करा लिया गया है। सीडीओ ने निरीक्षण में डी–8 से लेकर डी–11 तक निर्मित आरसीसी, नाली निर्माण के कार्यों की जांच में पाया कि संदीप आटोमोबाइल्स में रिपेयरिंग के सामने मुख्य सड़क पर बारिश का पानी जमा है। इसी तरह डी–1 के सामने मुख्य सड़क पर पानी जमा है, मारुति सुजुकी के शोरूम के पीछे पुलिया के पास मुख्य सड़क पर पानी जमा है, इससे स्पष्ट है कि सड़क की ढलाई ठीक से नहीं की गई है। अभिनंदन टेक्सटाइल्स के सामने बनी नाली गिर गई है, उद्यमियों ने बताया कि पुरानी नाली के ऊपर ही नई नाली का निर्माण कराया गया, जिससे नाली गिर गई है। इसी सड़क के दोनों तरफ कुछ स्थानों पर ही नाली का निर्माण नहीं कराया गया है। मारुति सुजुकी शोरूम से लेकर पटेल ट्रेनिंग कंपनी तक नाली का निर्माण नहीं कराया गया है। डी–4 के सामने सड़क के दक्षिण तरफ पुरानी नाली है, जिसका निकासी नहीं है और वह जाम है। अवर अभियंता ने बताया कि कुल 550 मीटर नाली का निर्माण होना था, जिसमें पांच सौ मीटर नाली का निर्माण करा दिया गया है। सीडीओ ने कहा कि सड़क निर्माण करते समय सड़क के दोनों तरफ नाली बनाने का प्रावधान किया जाना चाहिए था, जिससे बारिश का पानी सड़क पर जमा न होकर नाली के रास्ते बाहर निकल जाए। इससे लग रहा है कि अवर अभियंता की ओर से कार्यों में लापरवाही की गई है। ऐसे में सड़क कभी भी टूट सकती है। उन्होंने अधिशासी अभियंता, निर्माण खंड, लोक निर्माण विभाग को निर्देश दिया कि कमियों को ठीक कराएं।

इसमें लापरवाही बरतने के लिए संबंधित का उत्तरदायित्व तय कर सख्त कार्रवाई की जाए। औद्योगिक केंद्र से पानी की निकासी के लिए बनी मुख्य नाली जो आरटीओ आफिस से होते हुए कुर्ना नाला तक जाती है वह चोक मिली, जिसकी सफाई कराने के लिए नगर पालिका के ईओ को निर्देश दिया गया। इस दौरान लोक निर्माण विभाग निर्माण खंड व प्रांतीय खंड के अधिशासी अभियंता, निर्माण खंड के सहायक अभियंता, अवर अभियंता आदि मौजूद रहे।

फोन के पुराने वर्जन पर लेखपाल अड़े, तहसील में जनता के कई काम पड़े

महराजगंज। लेखपालों के पुराने मोबाइल फोन की फांस में फंसे लोग तहसील के चक्कर लगाने को मजबूर हैं। किसी का जातिप्रमाण पत्र या आय प्रमाण पत्र अधर में है तो कोई निवास प्रमाण पत्र के लिए परेशान है। जिले के लेखपालों ने 19 अगस्त को पुराना वर्जन बताकर अपना सरकारी फोन जमा कर दिया है, इससे आवेदन को अग्रसारित करने में समस्या हो रही है। बताया जा रहा है कि तीन हजार से ज्यादा आवेदन लंबित हैं। आय प्रमाणपत्र बनवाने के लिए सदर तहसील पहुंचे सुनील बताते हैं कि इस काम के लिए वह दूसरी बार यहां आए हैं। आय प्रमाणपत्र अग्रसारित नहीं होने के कारण बन नहीं पा रहा है। यह बहुत जरूरी है। पता चला कि अभी और वक्त लगेगा। इसी तरह काम नहीं होने बदहवास भीड़ में अपना बैग उलटते–पलटते दिखे। पूछने पर बताया कि वह जाति प्रमाणपत्र बनवाने के लिए परेशान हैं। कुछ पता नहीं चल रहा है। प्रमाणपत्र के लिए अब जनसेवा केंद्र जाने की सोच रहा हूं। देखना है कि वहां से कब तक मिलेगा। इसी तरह चेहरी के महेश बताते हैं कि निवास प्रमाणपत्र के लिए तहसील आए थे। यहां कहा जा रहा है कि चार–पांच दिन और लगेंगे।

शोभायात्रा में गया युवक रोहिन नदी में डूबा, मौत

महराजगंज। सदर कोतवाली थाना क्षेत्र के ग्राम सभा बरगदवा राजा निवासी एक युवक रोहिन नदी में डूब गया। एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद गहरे पानी से ग्रामीणों ने युवक को बाहर निकाला और जिला अस्पताल ले गए, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के अनुसार, सदर कोतवाली क्षेत्र के ग्राम सभा बरगदवा राजा में ग्रामीणों के सहयोग से मंदिर का निर्माण कराया गया है। सुबह मां दुर्गा की पूर्ति की प्राण–प्रतिष्ठा के लिए ग्रामीणों ने शोभायात्रा निकाली थी। शोभायात्रा में सुदर्शन यादव का पुत्र अशोक यादव (18) भी शामिल हुआ था। बैंडबाजे के साथ सभी लोग चौक थाना क्षेत्र के ग्राम केवलापुर खुर्द टोला चानकी स्थित रोहिन नदी में जल भरने गए। बताया जाता है कि इसी दौरान अशोक यादव का पैर फिसल गया और गहरे पानी में चला गया। साथ में गए लोगों ने शोर बचाया तो ग्रामीण इकट्ठा हो गए और युवक को पानी में ढूंढने लगे। एक घंटे कड़ी मशक्कत के बाद युवक को गहरे पानी से बाहर निकाला गया। मौके पर पहुंचे परिजन युवक को जिला अस्पताल ले गए, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। कलक्ट्रेट चौकी प्रभारी दुर्गेश सिंह ने बताया कि घटना चौक थाना क्षेत्र का है। जिला अस्पताल के कर्मचारियों की सूचना के आधार पर शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है।

मुख्य मार्ग के नालों की नहीं हुई सफाई, दुर्गंध से परेशानी

महराजगंज। नगर पालिका प्रशासन स्वच्छता को बढ़ावा देने का भले ही दावा कर रहा है, मगर हकीकत यह है कि नगर में सफाई व्यवस्था बदहाल है। नगर के सभी मुख्य मार्गों के किनारे बने नाले की सफाई नहीं हुई है। ऐसे में यदि बरसात हो गई तो न सिर्फ पानी सड़कों पर फैलेगा, बल्कि नगर वासियों की मुश्किलें काफी हद तक बढ़ जाएगी। नगर के 25 वार्डों की कुल आबादी 59 हजार से अधिक है। इतनी आबादी में स्वच्छता के प्रबंध व अन्य कार्यों के लिए कुल लगभग 300 सफाई कर्मी रखे गए हैं। औसत के मुताबिक देखें तो लगभग 196 व्यक्तियों पर एक सफाईकर्मी की तैनाती है। कम सफाई कर्मियों के होने की वजह से स्वच्छता की स्थिति में जो सुधार होना चाहिए, वह नहीं हो पा रहा है। वार्ड तो दूर की बाद है नगर के प्रमुख मार्गों के किनारे बने नालों तक में सफाई व्यवस्था बदहाल है। जहां–तहां उसमें कूड़ा पड़ा हुआ है, मगर उसकी सफाई को लेकर पूरा तंत्र बेफ्रिक है। नगर के विभिन्न मार्गों पर स्थित नालों के पड़ताल में यह स्थिति सामने आई। राष्ट्रीय राजमार्ग 730 के किनारे बने नाले पर सक्सेना चौक के पास नाला कूड़ा–करकट से भरा पड़ा है, लेकिन पालिका की ओर से सफाई पर ध्यान नहीं दिया गया है। निचलौल रोड पर मऊपाकड़ के पास बना नाला भी जाम है। उसमें कूड़ा–करकट भरा हुआ है, लेकिन उसके सफाई पर भी पालिका की ओर से गंभीरता नहीं दिखाई गई है। चिउरहां मार्ग पर बने नाले में भी जगह–जगह गंदगी व्याप्त है। मगर सफाई के लिए जिम्मेदार अधिकारियों की ओर से इस दिशा में कोई विशेष पहल नहीं की जा रही है।

इयूटी जमा करने के बाद पास हुआ प्याज

महराजगंज। प्याज निर्यात पर 40 प्रतिशत ड्यूटी जमा करने के बाद व्यापारियों ने अपनी–अपनी गाड़ियां पास करना शुरू कर दिया है। करीब 33 गाड़ी ड्यूटी जमा करने के बाद पास हुई और नेपाल के लिए रवाना की गई। कुछ व्यापारियों ने संशोधन की आस में गाड़ियों को सोनौली बॉर्डर पर गोदाम लेकर खाली करा दिया है, तो कुछ गाड़ियां के व्यापारियों के ड्यूटी के पैसे नहीं देने के कारण खड़ी है। प्याज के व्यापारियों ने गाड़ियों को पास कराना शुरू कर दिया है। व्यापारियों का कहना है कि सरकार से मांग करते हुए गाड़ियों को पास करा कर खाली कराया जा रहा है, नहीं तो गाड़ियों में प्याज सड़ने लगेगा। व्यापारी सन्नी गुप्ता ने बताया कि ड्यूटी जमाकर 33 गाड़ियों को पास कराकर नेपाल भेजा गया। कुछ व्यापारी ड्यूटी जमा करने के लिए राजी नहीं हुए उन गाड़ियों को गोदाम में खाली करा दिया गया है। कुछ व्यापारियों की गाड़ियां अभी संशोधन के इंतजार में खड़ी है। नेपाल सहित अन्य देशों को प्याज निर्यात के लिए बिल मूल्य का 40 प्रतिशत ड्यूटी चुकाना पड़ रहा है। शनिवार को कस्टम सीबीआईसी ने नोटिफिकेशन जारी कर प्याज एक्सपोर्ट पर ड्यूटी लगा दिया था। टमाटर के बाद प्याज के बढ़ते दामों की आशंकाओं के बीच सरकार ने प्याज के निर्यात पर 40 फीसदी की कस्टम ड्यूटी लगा दी है। कस्टम अधीक्षक एसके पटेल ने बताया कि 33 ट्रक प्याज कस्टम की कार्रवाई पूरी होने के बाद निर्यात की अनुमति दी गई है।

दिव्यांग दम्पत्ति दिव्यांगजन शादी प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अंतर्गत करें आवेदन

कुशीनगर। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारीअलख निरंजन मिश्र ने बताया कि दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा संचालित दिव्यांगजन शादी प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अन्तर्गत दम्पत्ति में युवक के दिव्यांग होने की दशा में रू०15000/ युवती के दिव्यांग होने की दशा में रू० 20000/एवं युवक एवं युवती दोनों के दिव्यांग होने पर रू0 35000 धनराशि निर्धारित है।पात्रता के संबंध में उन्होंने बताया कि शादी के समय युवक की आयु 21 वर्ष से कम तथा 45 वर्ष से अधिक न हो। दम्पत्ति उत्तर प्रदेश के स्थाई निवासी हो या कम से कम 5 वर्ष से अधिवासी हो।युवती की उम्र 18 वर्ष से कम तथा 45 वर्ष से अधिक न हो।दम्पत्ति में कोई आयकर दाता न हो।मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा प्रदत्त प्रमाण पत्र के अनुसार दिव्यांगता 40 प्रतिशत अथवा उससे अधिक होनी चाहिये।दम्पत्ति किसी आपराधिक मुकदमे में वांछित न हो।ऐसे दिव्यांग दम्पत्ति पात्र होंगे जिनका विवाह दिनांक 01.04.2022 से 31.03.2024 के मध्य हुआ हो।उन्होंने ने बताया कि दिव्यांग शादी प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अन्तर्गत इच्छुक दिव्यांग दम्पत्ति दिव्यांग शादी प्रोत्साहन अनुदान हेतु वेवसाइट **http://divyangjan-upsdc-gov-in** पर आनलाइन आवेदन कर सकते है।आनलाइन फार्म भरते समय आवेदक दम्पत्ति को दिव्यांगता प्रदर्शित करने वाला संयुक्त नवीनतम् फोटो, विवाह पंजीकरण प्रमाण पत्र यदि हो, आय व जाति प्रमाण पत्र, युवक एवं युवती का आयु प्रमाण पत्र (जिसमें जन्मतिथि का अंकन हो). सक्षम अधिकारी से निर्गत दिव्यांगता प्रमाण पत्र राष्ट्रीयकृत बैंक में संचालित संयुक्त खाता,अधिवास का प्रमाण पत्र, तथा युवक एवं युवती की आधार कार्ड की छाया प्रति आदि अभिलेखों के साथ आवेदन पत्र आनलाइन उपरोक्त बेवसाइट पर करना अनिवार्य है,साथ ही ऑन लाइन सबमिट आवेदन पत्र की प्रिंट प्रति एवं वांछित प्रपत्रों की हार्ड कापी जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी कार्यालय, विकास भवन,रविन्द्र नगर कुशीनगर को प्राप्त करायें। अधिक जानकारी के लिए जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी कार्यालय. विकास भवन, रविन्द्र नगर, कुशीनगर में किसी भी कार्य दिवस में सम्पर्क कर सकते हैं।

दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियो संस्थाओं को विभिन्न श्रेणी में मिलेगा राज्य स्तरीय पुरस्कार

कुशीनगर। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारीअलख निरंजन मिश्र ने बताया कि प्रत्येक वर्ष की भाँति वर्तमान वित्तीय वर्ष 2023–24 में षविश्व विकलांग दिवस 03 दिसम्बर के अवसर पर दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों संस्थाओं को विभिन्न श्रेणी के राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान किया जाना है। निदेशालय दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग उ०प्र० लखनऊ द्वारा पुरस्कार हेतु संस्तुति सहित आवेदन पत्र दिनांक 31.08.2023 तक अनिवार्य रूप से निदेशालय में उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है।आवेदन के संबंध में जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी ने बताया कि राज्य स्तरीय पुरस्कार नियमावली–2017 के अन्तर्गत पुरस्कार हेतु निम्नानुसार निर्धारित श्रेणियों मे आवेदन किया जा सकता है। दक्ष दिव्यांग कर्मचारी स्वनियोजित दिव्यांगजन के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार। दिव्यांगजन हेतु सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता तथा सर्वश्रेष्ठ प्लेसमेंट अधिकारी या एजेंसी के लिए सेवायोजक को राज्य स्तरीय पुरस्कार।

दिव्यांगजन के निमित्त कार्यरत् सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति तथा सर्वश्रेष्ठ संस्था के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार।प्रेरणाश्रोत हेतु राज्य स्तरीय पुरस्कार। दिव्यांगजन के जीवन सुधारने के निमित्त सर्वश्रेष्ठ नवीन अनुसंधान या उत्पाद विकास के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार ।दिव्यांगजन हेतु बाधामुक्त वातावरण के सृजन हेतु सर्वश्रेष्ठ कार्य के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार।दिव्यांगजन को पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने वाले सर्वश्रेष्ठ जिला के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार।सर्वश्रेष्ठ सृजनशील दिव्यांग व्यस्क व्यक्तियों एवं सर्वश्रेष्ठ बालकबालिका हेतु राज्य स्तरीय पुरस्कार।सर्वश्रेष्ठ ब्रेलप्रेस के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार ।दिव्यांगजन के लिए सर्वोत्तम अनुकूल वेबसाइट हेतु राज्य स्तरीय पुरस्कार।सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार।

दमोदरी में मुख्य पश्चिमी गण्डक नहर का सकरा पुल बन रहा है दुर्घटना का कारण

नेबुआ नौरंगिया कुशीनगर । नौरंगिया रामकोला सड़क मार्ग पर दामोदर गांव के पास स्थित मुख्य पश्चिमी गंडक नहर पर बना पुराना पुल सकरा होने से यहां हमेशा कोई न कोई हादसे हो रहे हैं। सड़क चौड़ीकरण होने के बाद पुल चौड़ा नहीं होने से राहगीरों को काफी परेशानी होने के अलावा आये दिन दुर्घटना का भी सामना करना पड़ता है। क्षेत्रीय लोगों ने वहां नया पुल बनवाने की मांग की है। बताते कि रामकोला–सिंगहा मार्ग पहले सिंगल लेन की सड़क थी। उसी के सापेक्ष दमोदरी के पास मुख्य पश्चिम गंडक नहर पर नहर निर्माण के समय का ही पुल बना है। पिछले वर्ष इस सड़क मार्ग का दोहरीकरण के साथ सड़क निर्माण भी कराया गया। पुल के दोनों तरफ चौड़ी सड़क बनवा दिया गया पर पुल का नवनिर्माण नही हो सका, इसलिए उसको यथास्थिति में ही छोड़ दिया गया। दक्षिण के तरफ पुल से पहले रोड मुड़ा हुआ है। नीचे से पुल की तरफ आगे बढ़ने पर पुल और मोड़ दूर से दिखाई नहीं देता है। सड़क का बेहतरीन और चौड़ा होने के चलते वाहनों की गति काफी तेज होती है। पुल के पास आने पर मोड़ और सकरा पुल होने के कारण चालक अपना नियंत्रण खो देता है

प्रधानमंत्री के वोकल फार लोकल से कुम्हारों से परम्परागत व्यवाय को मिली नई ऊर्जा: अध्यक्ष

उत्तर प्रदेश माटीकला बोर्ड के अध्यक्ष ने कामगारों को आवंटित पट्टे के सम्बन्ध में की समीक्षा बैठक

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश माटी कला बोर्ड ओम प्रकाश गोला प्रजापति ने कलेक्ट्रेट सभागार में माटीकला से जुड़े कामगारों को आवंटित पट्टों की वस्तुस्थिति आदि के सम्बन्ध में जनपद के अधिकारीगणों के साथ समीक्षा बैठक की। अध्यक्ष ने समस्त उप जिलाधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि कैम्प लगाकर कामगारों को अधिक से अधिक पट्टे का आवंटन किया जाए, इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता न बरती जाये, इस दौरान उन्होंने एल0डी0एम0 को निर्देशित करते हुए कहा कि कामगारों को ज्याद से ज्यादा लोन कम समय में दिया जाए ताकि वे अपने काम को और बढ़ाते हुए अपने आय में वृद्धि कर सके। उन्होंने जिला ग्रामोद्योग अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि कामगारों को अधिक से अधिक टूल किट का वितरण कराया जाए ताकि वह अपने कार्य को और ज्यादा गति देकर अपने स्वरोजगार को बढ़ाते हुए अपना और ज्यादा विकास कर सके, उन्होंने माटी कलाकारों, कुम्हारों से कहा कि सभी लोग पट्टे और लीज पर दुकान के आवंटन के संबंध में अपने तहसील के नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत में जाकर अधिशासी अधिकारी को पत्र दें, उन्होंने कुम्हार, प्रजापति समाज को अवगत कराते हुए कहा कि प्रदेश में मिट्टी का कार्य करने वाले कारीगरों एवं शिल्पियों के व्यवसाय में वृद्धि करने वाले तत्सम्बन्धित कामगारों के परम्परागत कला को संरक्षित और सम्बर्धित करते हुए उनकी सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सु. ढ़ता तकनीकी विकास को बढ़ावा देने व विपणन आदि की सुविधा उपलब्ध कराने तथा परम्परागत उद्योगों को नवाचार के माध्यम से संरक्षित एवं सम्बर्धित करते हुए अधिकाधिक लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उ0प्र0 माटीकला बोर्ड का गठन किया गया है, उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रानिक चाक के माध्यम से प्रतिदिन आठ घण्टे में चार से पांच हजार तक कुल्हड़ तैयार होंगें, जिनको बेचकर चार से पांच हजार की आमदनी होगी, उन्होंने कुम्हारों को व्यवसाय के नये ट्रेडिंग व पैकेजिंग पर जोर दिया, उन्होंने बताया कि शादी विवाह व अन्य समारोह में मॉल व बड़े स्तरों पर काफी चाय, लस्सी, आदि के लिए डिजाईनर कुल्हड़, ग्लास को पसन्द किया जा रहा है, अब कुम्हारों को समय व आवश्यकता के अनुसार अपने परम्परागत व्यवसाय में नवाचार पहल करने की आवश्यकता है, अध्यक्ष ने बताया कि औद्योगिक जगत द्वारा कच्चे मॉल के रूप में माटी का प्रयोग कर मूर्तियां, खिलौने, बर्तन इत्यादि वस्तुएं बनाने का प्रचलन सदियों से रहा है, सिंगल यूज प्लास्टिक उत्पादों के प्रयोग से स्वास्थ्य के साथ पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, इससे कैंसर व अन्य प्रकार की बीमारियां पैदा हो रही है, इसलिए सरकार माटीकला के विभिन्न योजनाओं द्वारा स्वरोजगार को प्रेरित कर रही है, अध्यक्ष ने बताया कि प्रधानमंत्री के ''वोकल फार लोकल' एवं मुख्यमंत्री के एक जनपद एक उत्पाद के द्वारा स्थानीय माटी कलाकारों के उत्पादों को बल मिला है। पूर्व में वितरित इलेक्ट्रानिक चाक के माध्यम से हम अपने परम्परागत व्यवसाय व तकनीकी में आधुनिकता का नवाचार समाहित कर रहे हैं, जिससे कुम्हारों के जीविकोपार्जन में उन्नयन होगा।

इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सहदेव कुमार मिश्र ने कहा कि सभी तहसीलों के कुम्हारी व्यवसाय से जुड़ें कामगारों की सूची बना ली जाये और जो पात्र लाभार्थी हैं, उन्हें प्राथमिकता के आधार पर पट्टा देने का कार्य किया जाये, जिससे कि वह अपने रोजगार में और अधिक वृद्धि कर सके और उनकी आय में बढ़ोत्तरी हो सके। उन्होंने कहा कि अध्यक्ष द्वारा जो भी दिशा–निर्देश बैठक में दिये गये हैं, उसका अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित किया जाये। इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक त्रिभुवन नाथ त्रिपाठी ने भी माटीकला से जुड़ी उत्पादों और उनसे होने वाले लाभ के सम्बन्ध में उपस्थित लाभार्थियों को जानकारी दी, इस दौरान जिला खादी ग्रामोद्योग अधिकारी श्रीमती किरन श्रीवास्तव ने केन्द्र एवं प्रदेश सरकार के माध्यम से माटीकला बोर्ड द्वारा संचालित योजनाओं के सम्बन्ध में लाभार्थियों को बिन्दुवार जानकारी दी, इस दौरान कार्यक्रम का सफल संचालन सुश्री साधना मिश्रा जिला समन्वयक जिला प्रोबेशन कार्यालय द्वारा किया गया। इस दौरान अध्यक्ष का स्वागत अपर पुलिस अधीक्षक त्रिभुवन नाथ त्रिपाटी, खादी ग्रामोद्योग अधिकारी किरन श्रीवास्तव ने पुष्पगुच्छ व स्मृतिचिन्ह भेंटकर उनका स्वागत किया। इस दौरान बैठक में उप जिलाधिकारी सदर निखिल कुमार यादव, उप जिलाधिकारी घोरावल राजेश सिंह, उप जिलाधिकारी ओबरा प्रभारक सिंह, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह सहित अन्य सम्बन्धितगण उपस्थित रहें।

कविता

फिर से भारत चांद पर
पूरा हुआ सपना भारत का
पहुंचा चांद पर चंद्रयान
लहराने अपना तिरंगा
और बढ़ाने देश की शान!
संपर्क बना रहा हौसलों का
अंतरिक्ष में जा पहुंचे हम
आस न छोड़ी सांस न छोड़ी
वैज्ञानिकों में हमारे है दम!
आर्यभट्ट का पूरा हुआ सपना
आस थी बहुत पुरानी यह
फिर से पहुंचा चांद पर भारत
पूरी हुई कहानी यह!
उगा सूरज स्वाभिमान का
समय है भारत के अभिमान का
पूरा हुआ यह अभियान
सच में मेरा भारत महान!

डा सीमा मिश्रा/
दैनिक बुद्ध का सन्देश

शासन–प्रशासन महिलाओं के सुरक्षा, सम्मान व उनके उत्थान व सशक्तिकरण हेतु है प्रतिबद्ध

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। कम्युनिटी पुलिसिंग एवं महिला सशक्तिकरण हेतु ''शक्ति दीदी'' के माध्यम से चलाये जा रहे जागरुकता अभियान के अंतर्गत 'डॉ0 यशवीर सिंह, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र' के निर्देशन में जनपद के समस्त थाना क्षेत्र अंतर्गत महिला बीट पुलिस अधिकारियों द्वारा गांवों में भ्रमण कर प्राथमिकता के आधार पर महिला/बालिकाओं को जागरुक करने के साथ ही महिला संबंधित समस्याओं के निस्तारण कराने के संबंध में ग्राम चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। अब महिलाओं/बालिकाओं को अपनी समस्या व शिकायत लेकर थाना, पुलिस चौकी व अन्य पुलिस कार्यालय बार–बार नही आना पड़ेगा अपितु 'शक्ति दीदी' नियमित अन्तराल पर ग्राम चौपाल के माध्यम से विभिन्न गांवों में उपस्थित होकर महिलाओं/बालिकाओं को

जागरुक करने के साथ ही उनसे संवाद कर उनकी शिकायतों का गुण–दोष के आधार पर निराकरण कराया जाएगा। जनपद के समस्त थानों की ''शक्ति दीदी'' द्वारा अपने–अपने थाना क्षेत्रान्तर्गत चौपाल का आयोजन किया गया, जिसमें भारी संख्या में महिलाओं/बालिकाओं व बच्चों ने प्रतिभाग किया। आयोजित ग्राम चौपाल में महिला बीट पुलिस अधिकारियों द्वारा संवाद कर महिलाओं/बालिकाओं से वार्ता कर उनकी समस्याओं व शिकायतों के विषय में जानकारी प्राप्त की गई तथा उनके निस्तारण हेतु तत्काल प्रयास किए गए। चौपाल में उपस्थित महिलाओं एवं बालिकाओं को कम्युनिटी पुलिसिंग एवं महिला सशक्तिकरण के तहत महिला सुरक्षा व बचाव संबंधी जानकारी दी गई और शासन द्वारा जारी 'हेल्प लाइन नम्बर, जैसे– 1090, 112, 1076, 1098, 108' की विस्तृत जानकारी देते हुए संकट के समय इनके प्रयोग हेतु बताया गया। साथ ही साइबर अपराधों के संबंध में अवगत कराते हुए इससे बचने और सतर्क रहने हेतु '1930 हेल्प लाइन नंबर' का उपयोग करने के संबंध में जानकारी दी गई। सरकार द्वारा महिलाओं से संबंधित संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में जानकारी देकर व पम्पलेट वितरित उन्हें जागरूक किया गया।

शिकायत निस्तारण के साथ नए थीम पर आयोजित होगा ग्राम समाधान दिवस'

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। जनपद में ग्राम पंचायत स्तर पर शिकायतों के निस्तारण के लिए चलाया जा रहे ग्राम समाधान दिवस में शिकायतों का निस्तारण में बेहतर परिणाम आने पर जनपद लगातार प्रदेश में अच्छे रैंक में बना हुआ है। इस सफलता को देखते हुए जिलाधिकारी सोनभद्र चंद्र विजय सिंह ने इसको प्रत्येक सोमवार को एक नई थीम पर चलाई जाने का निर्देश दिया है।

इसके अनुसार प्रत्येक सोमवार को 81 ग्राम पंचायत में ग्राम समाधान दिवस का आयोजन किया जा रहा है जिसमें जनपद स्तर एवं विकासखंड स्तर से नोडल अधिकारी नामित किए गए हैं। ग्राम पंचायत में ग्राम प्रधान, सचिव, लेखापाल, पंचायत सहायक, आंगनवाड़ी, आशा, एनम इत्यादि के उपस्थिति में गांव की समस्या का निस्तारण मौके पर किया जाता है। इसके सफलता के बाद विभिन्न विभागों की जो भी जनकल्याणकारी एवं लाभार्थी परक योजनाएं हैं इसकी थीम बनाकर अब ग्राम समाधान दिवस का आयोजन किया जाएगा।

इसके तहत प्रत्येक सोमवार को किसी न किसी विभाग की योजनाओं की विशेष समीक्षा एवं उस ग्राम पंचायत में लक्ष्य को पूरा करने के लिए लोगों से वार्ता कर स्थलीय निरीक्षण भी किया जाएगा। इस सोमवार शौचालय निर्माण तथा प्रयोग की थीम 'अबकी बरसात शौचालय के साथ' पर ग्राम समाधान दिवस का आयोजन किया जा रहा है। इसके तहत इन 81 ग्राम पंचायत में 4000 से अधिक लाभार्थियों को प्रथम किस्त की धनराशि जारी की गई है जिनके शौचालय का निर्माण करा कर एक सप्ताह में दूसरी किस्त की धनराशि प्रेषित किए जाने का लक्ष्य रखा गया है। नोडल अधिकारी उस ग्राम पंचायत में लाभार्थियों से इसकी समीक्षा कर उनको शौचालय निर्माण के लिए प्रेरित करेंगे तथा ग्राम प्रधान एवं सचिव एक सप्ताह में शौचायलयों को पूर्ण कराते हुए द्वितीय किस्त की डिमांड प्रेषित करेंगे। इस सप्ताह 'अबकी बरसात शौचालय के साथ' ग्राम समाधान दिवस का आयोजन किया जाएगा इससे ग्राम समाधान दिवस में सभी विभागों के कार्यक्रम एवं योजनाओं को जोड़ा जा रहा है जिससे कि सभी विभाग की रुचि बनी रहे तथा उनके कार्य को जनपद में जमीनी स्तर पर और प्रभावी बनाया जा सके।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458
संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा
9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244

राष्ट्रीय दैनिक
बुद्ध का संदेश

थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरुआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

थाना जुगैल पुलिस द्वारा 03 नफर वारण्टियों को किया गया गिरतार

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के कुशल निर्देशन में जनपद में वांछित एवं वारण्टियों की गिरतारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में आज दिनांक 23.08.2023 को थाना जुगैल पुलिस द्वारा 03 नफर वारण्टियों क्रमशः1. वाद सं0–31/2015 धारा 323, 504 भादवि से सम्बन्धित वारण्टी नवमी पुत्र रामआधार, निवासी ग्राम बड़गावा, थाना जुगैल, जनपद सोनभद्र 2. वाद संख्या–1186/2011 धारा 279, 337, 304 (ए) भादवि से सम्बन्धित वारण्टी सूर्यवली विश्वकर्मा पुत्र शिवप्रसाद विश्वकर्मा निवासी ग्राम बड़गावा, थाना जुगैल, जनपद सोनभद्र 3.वाद संख्या 4426/2020 धारा 323, 504, 452 भादवि से सम्बन्धित वारण्टी लवकुश विश्वकर्मा पुत्र तेजू विश्वकर्मा निवासी ग्राम चतरवार, थाना जुगैल, जनपद सोनभद्र को गिरतार कर न्यायालय भेजा गया ।

भाजपा वोटर चेतना अभियान आज

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी द्वारा वोटर चेतना महाअभियान का एक दिवसीय जिला कार्यशाला बृहस्पतिवार को प्रातः 11.00 बजे भाजपा जिला कार्यालय राबर्ट्सगंज पर आयोजित की गयी है, कार्यशाला में बतौर मुख्यअतिथि काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय महामंत्री/जिला प्रभारी अशोक चौरसिया का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। बैठक में मुख्यरुप से जिला पदाधिकारी, मण्डल प्रभारी, मण्डल अध्यक्ष, व वोटर चेतना अभियान के जिला संयोजक, विधानसभा संयोजक, मण्डल संयोजक, सभी मोर्चो के जिलाध्यक्ष व सभी सम्मानित जनप्रतिनिधिगणों की उपस्थिति अनिवार्य है। इस आशय की जानकारी भाजपा जिला मिडिया प्रभारी अनूप तिवारी ने दी।

यूपी बार काउंसिल सदस्य सचिव ने कार्यभार संभाला, किया गया स्वागत,दी गई बधाई

अब सीओपी नवीनीकरण शुल्क 250 लगेगा- जय नारायण पाडेय

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। यूपी बार काउंसिल सदस्य सचिव एडवोकेट हाईकोर्ट लखनऊ

जय नारायण पांडेय ने अपना कार्यभार संभाल लिया। माल्यार्पण कर अधिवक्ताओं ने स्वागत करते हुए उन्हें बधाई दी है। अपना दायित्व संभालने के बाद सदस्य सचिव श्री पांडे जी ने बताया कि अधिवक्ताओं का सीओपी नवीनीकरण शुल्क 500 रूपये की जगह अब सिर्फ 250 रूपये लगेगा। यह निर्णय यूपी बार कौंसिल की बर्चुअल बैठक में लिया गया है। बता दें कि 21 अगस्त 2023 को यूपी बार काउंसिल के सदस्य सचिव जय नारायण पांडेय एडवोकेट हाईकोर्ट लखनऊ ने अपना कार्यभार संभाल लिया। यूपी बार काउंसिल अध्यक्ष शिव किशोर गौड़ एडवोकेट, पूर्व अध्यक्ष पंचूराम मौर्य, इमरान मुहम्मद खान, अजय यादव आदि अधिवक्ताओं ने माल्यार्पण करते हुए पुष्प गुच्छ भेंट कर सदस्य सचिव का स्वागत करते हुए बधाई दी है। यूपी बार काउंसिल सदस्य सचिव जय नारायण पांडेय एडवोकेट ने बार काउंसिल अध्यक्ष को 21 अगस्त को पत्रक देकर कहा था कि अधिवक्ताओं के सीओपो नवीनीकरण शुल्क जो 500 रूपये बार की पूर्व बैठक में निर्धारित किया गया है वह बहुत अधिक है। उसे बर्चुअल बैठक बुलाकर कम किया जाए। यूपी बार काउंसिल अध्यक्ष शिव किशोर गौड़ एडवोकेट ने इसे गंभीरता से लेते हुए तत्काल वर्चुअल बैठक बुलाई, जिसमें सर्वसम्मति से 250 रूपये सीओपी नवीनीकरण शुल्क निर्धारित किया गया है। उधर पांडेय को यूपी बार काउंसिल का सदस्य सचिव बनाए जाने पर वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश शरण मिश्र, उमापति पांडेय, राजेश कुमार पाठक, जितेंद्र देव पांडेय, उमेश पांडेय आदि अधिवक्ताओं ने बधाई दी है।

माथे से मुंहासें दूर करने के लिए आजमाएं ये 5 घरेलू नुस्खे, जल्द दिखेगा असर

माथे पर मुंहासे त्वचा की सबसे जिद्दी समस्याओं में से एक है, जिनका पूरे लुक पर बुरा असर पड़ता है।अत्यधिक सक्रिय वसामय ग्रंथियां माथे पर मुंहासे होने का कारण बनती हैं। ये ग्रंथियां सीबम नामक एक पदार्थ बनाती हैं, जो रोमछिद्रों में कीटाणुओं या मृत त्वचा कोशिकाओं को फंसा सकती हैं।आइए आज हम आपको 5 ऐसे घरेलू नुस्खे बताते हैं, जो माथे से मुंहासें दूर करने में प्रभावी माने जाते हैं।

एलोवेरा का करें उपयोग

एलोवेरा में एंटी–बैक्टीरियल और एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो माथे पर मुंहासे और फुंसियों को कम करने में मदद कर सकते हैं।लाभ के लिए एलोवेरा जेल को प्रभावित हिस्से पर हल्के हाथों से लगाएं।इसे 20–30 मिनट तक लगा रहने दें। इसके बाद माथे को ठंडे पानी से धो लें।जब तक समस्या से छुटकारा न मिल जाए तब तक इस उपाय को रोजाना सुबह–शाम दोहराते रहें।यहां जानिए त्वचा को एलोवेरा से मिलने वाले लाभ।

टी ट्री ऑयल लगाएंः टी ट्री ऑयल में एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो हल्के से मध्यम माथे के मुंहासों को कम कर सकते हैं। इस तेल की एंटी–बैक्टीरियल प्रकृति मुंहासे पैदा करने वाले बैक्टीरिया से भी लड़ सकती है।लाभ के लिए टी ट्री ऑयल की 1–2 बूंदों को नारियल के तेल के साथ मिलाएं। अब इस मिश्रण में रुई डुबोकर इसे प्रभावित क्षेत्रों पर लगाएं।इसे रातभर लगा रहने दें। ऐसा आप रोजाना एक बार कर सकते हैं।

नींबू का तेल भी आएगा काम

नींबू के तेल में एंटी–ऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जो त्वचा से मृत त्वचा कोशिकाओं को दूर करके मुंहासों को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं।इसमें मैग्नीशियम एस्कॉर्बिल फॉस्फेट भी होता है, जिसका त्वचा पर हाइड्रेटिंग प्रभाव पड़ता है।लाभ के लिए नारियल के तेल में नींबू के तेल की 2–3 बूंदें मिलाकर इसे माथे पर लगाएं और मिश्रण को सूखने के लिए छोड़ दें।यहां जानिए नींबू के तेल से जुड़े हैक्स।

नीम भी है प्रभावी

नीम में शक्तिशाली एंटी–माइक्रोबियल और एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं। ये गुण त्वचा के मुंहासों को कम करने में मदद कर सकते हैं।लाभ के लिए 10–15 नीम की पत्तियों को आवश्यकतानुसार पानी के साथ पीसकर गाढ़ा पेस्ट बना लें। अब इस मिश्रण को प्रभावित जगह पर लगाकर 20–30 मिनट के लिए ऐसे ही छोड़ दें।इसके बाद माथे को पानी से धो लें।मुंहासों से छुटकारा दिलाने में ये 5 नीम फेस पैक भी मदद कर सकते हैं।

शहद से भी दूर होगी समस्या

शहद में मॉइस्चराइजिंग गुण होते हैं, जो त्वचा को पोषण देने और ठीक करने में मदद कर सकते हैं।इसके अलावा इसमें मौजूद एंटी–माइक्रोबियल प्रभाव मुंहासे पैदा करने वाले बैक्टीरिया के विकास को रोकने में मदद कर सकता है।लाभ के लिए 1–2 चम्मच ऑर्गेनिक शहद को माथे पर लगाएं। इसे 20–30 मिनट तक लगा रहने दें और फिर सादे पानी से माथे को साफ कर लें।

जंपसूट पहन अमायरा दस्तूर ने दिखाया ग्लैमरस अंदाज, हर एक तस्वीरों को देख अटक गई फैंस की सांसें

बॉलीवुड एक्ट्रेस अमायरा दस्तूर आए दिन किसी ना किसी वजह से सोशल मीडिया पर छाई हुई रहती हैं। एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस अक्सर उनके लुक्स पर से निगाहें नहीं हटा पाते हैं। हाल ही में अभिनेत्री ने

लेटेस्ट ग्लैमरस तस्वीरें इंस्टाग्राम पर साझा कर लोगों को अपने हुस्न का कायल कर दिया है। एक्ट्रेस अमायरा दस्तूर अपनी एक्टिंग से ज्यादा फेमस अपने लुक्स के कराण हैं। उनका हर एक लुक इंस्टाग्राम पर पोस्ट होते ही तेजी से वायरल होने लग जाता है। हालांकि वो अपनी हर एक बोल्ड और हॉट फोटोज से सोशल मीडिया का तापमान बढ़ा देती हैं। अमायरा दस्तूर ने अपनी लेटेस्ट तस्वीरों में बेहद ही स्टाइलिश आउटफिट पहन इंटरनेट पर कहर बरपा दिया है। इन तस्वीरों में एक्ट्रेस अमायरा दस्तूर ने रिवीलिंग जंपसूट पहना हुआ है, जिसमें उनका स्टनिंग अवतार देखकर फैंस मदहोश हो गए हैं। ओपन हेयर और मिनिमल मेकअप कर के एक्ट्रेस अमायरा दस्तूर ने अपने आउटलुक को अच्छे से निखारा है। कानों में इयररिंग्स, चेहरे पर प्यारी सी स्माइल और सिजलिंग लुक्स देकर एक्ट्रेस अपने इस अवतार में चार चांद लगा रही हैं। बता दें कि एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो लोग उनकी तस्वीरों पर जमकर लाइक्स और कॉमेंट्स करते हैं।

नेटफ्लिक्स ने किया खाकी:द बिहार चैप्टर के दूसरे भाग का ऐलान, टीजर जारी

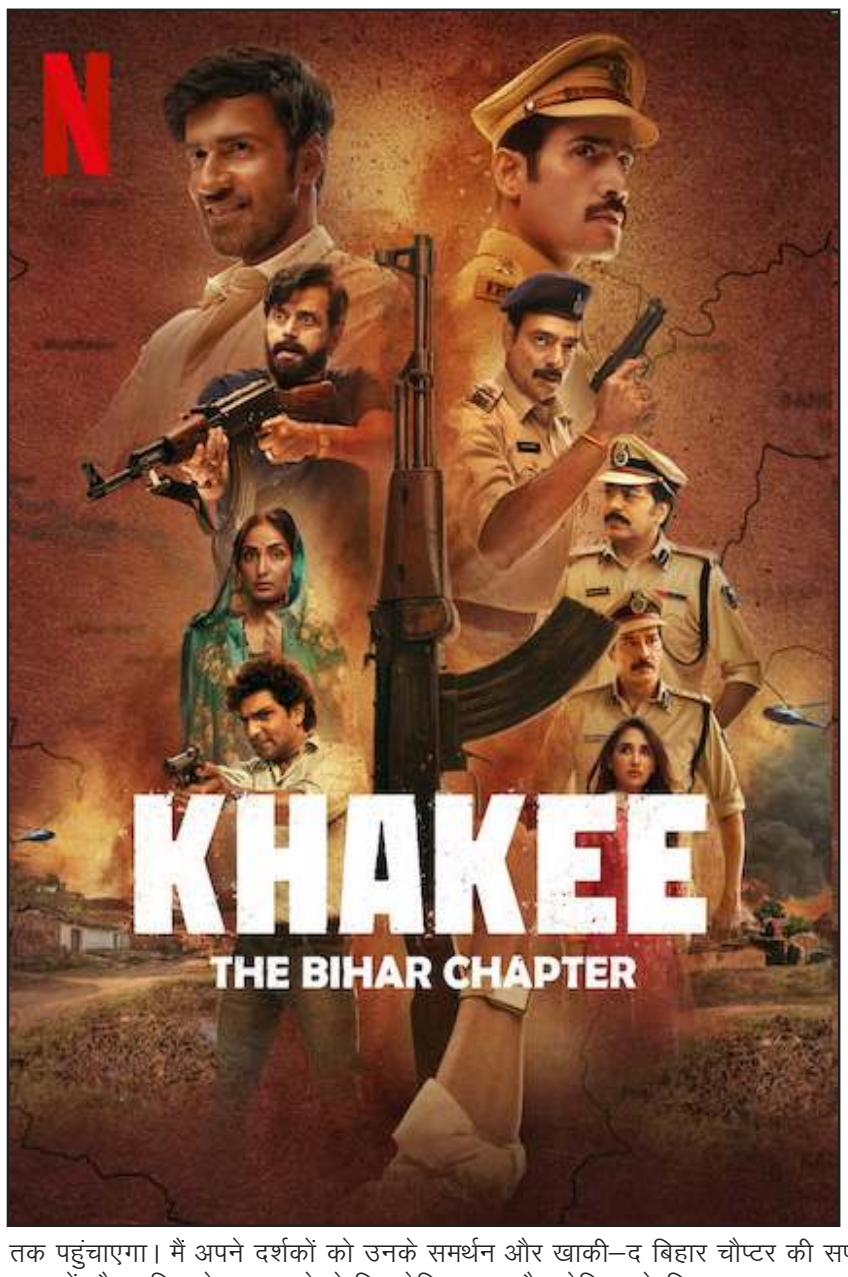

पिछले साल ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई वेब सीरीज खाकीरू द बिहार चौप्टर का दर्शकों और समीक्षकों द्वारा काफी सराहा गया था।दर्शक पिछले लंबे वक्त से खाकी के दूसरे भाग का इंतजार कर रहे थे, जो अब खत्म हो चुका है। दरअसल निर्माताओं ने खाकीरू द बिहार चौप्टर 2 का ऐलान कर दिया है।इसके साथ खाकी 2 का टीजर भी सामने आ चुका है, जिसे सोशल मीडिया पर बेशुमार प्यार मिल रहा है। नेटफ्लिक्स इंडिया ने अपने आधिकारिक ट्विटर पर खाकीरू द बिहार चौप्टर 2 का टीजर साझा किया है। इसके कैप्शन में उन्होंने लिखा, आप बुलाएं और हम ना आएं? कट्टा और कानून की कहानी के दूसरे पड़ाव के लिए खाकी की वापसी।नीरज पांडे द्वारा लिखित और निर्देशित इस सीरीज में करण टैकर, अविनाश तिवारी, अभिमन्यु सिंह, ब्रिजेश्वर सिंह जतिन सरना, रवि किशन, आशुतोष राणा और भरत झा अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे।भाव धूलिया इसके निर्माता हैं। खाकी का दूसरा सीजन इस डील से बाहर होने वाली पहली सीरीज होगी। फिल्म निर्माता और फ्राइडे फिल्मवर्क्स के संस्थापक नीरज ने एक बयान में कहा, नेटफ्लिक्स के साथ काम करना एक पुरस्कृत अनुभव रहा है जिसने असीमित संभावनाओं को खोल दिया है। कहानी कहने के लिए उनका जुनून मेरे दृष्टिकोण के साथ अच्छी तरह से मेल खाता है। अब तक हमारी एक साथ यात्रा अविश्वसनीय रही है और मैं मुझे विश्वास है कि हमारा विस्तारित सहयोग भारत के हृदय क्षेत्र से अधिक स्थानीय कहानियों को देश और विश्व स्तर पर व्यापक दर्शकों तक पहुंचाएगा। मैं अपने दर्शकों को उनके समर्थन और खाकी–द बिहार चौप्टर की सफलता के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं।. यह हमें और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है। मोनिका शेरगिल, उपाध्यक्ष – सामग्री, नेटफ्लिक्स इंडिया, ने कहारू नीरज पांडे जैसे दूरदर्शी फिल्म निर्माता के साथ साझेदारी से हमें कहानी कहने की सीमाओं को आगे बढ़ाने और हमारे दर्शकों के लिए परिभाषित मनोरंजन लाने में मदद मिलती है। उनकी अनूठी शैली और मनोरम कथाएं लाने की क्षमता के साथ स्क्रीन, मैं यह देखने के लिए उत्सुक हूं कि भविष्य में प्रशंसकों की पसंदीदा फिल्में हम साथ मिलकर क्या बना सकते हैं। खाकी का दूसरा सीजन इस रोमांचक साझेदारी का पहला अध्याय है, और आने वाले समय में और भी अधिक उत्साह देखने को मिलेगा।

उपन्यास हॉरर फिल्म तंत्र से अनन्या नागल्ला का पहला लुक जारी किया गया!

श्रीनिवास गोपीसेट्टी द्वारा निर्देशित एक अनोखी हॉरर फिल्म तंत्र में प्रतिभाशाली अनन्या नागल्ला केंद्रीय भूमिका में हैं। हाल के

वर्षों में मल्लेशम और वकील साब से प्रसिद्धि पाने वाली अभिनेत्री फिल्म में एक दुर्लभ किरदार निभा रही हैं। उनका फर्स्ट लुक मेकर्स ने जारी कर दिया है. हमें लगता है कि उसका चरित्र बुरी ताकतों द्वारा सताया गया है जो असाधारण अनुष्ठानों में पारंगत हैं। धनुष, जो बहुमुखी अभिनेता श्रीहरि के बेटे हैं, तंत्र के नायक हैं। मर्यादा रमन्ना फेम सलोनी एक और प्रमुख भूमिका में नजर आएंगी। तंत्र दर्शकों को भारत के अद्वितीय तंत्र शास्त्रों के महान रहस्यों का स्वाद चखाएगा। फर्स्ट कॉपी मूवीज, बी द वे फिल्म्स और वी फिल्म फैक्ट्री मिलकर इस फिल्म का निर्माण कर रहे हैं। यह महिला–केंद्रित हॉरर मनोरंजन मूलतरू तंत्र से संबंधित भारतीय पुराणों के अज्ञात पहलुओं के बारे में होगी।

इन लोगों को भूल से भी न खाने चाहिए बैंगन, घर में लाने से पहले एक बार जरूर पढ़ लीजिए

कई ऐसे लोग हैं जिन्हें बैंगन खाना काफी ज्यादा पसंद होता है. बैंगन की सबसे बड़ी खासियत यह है कि हर मौसम में यह आपको आराम से मिल जाता है. लेकिन क्या आपको पता है सर्दी में बैंगन खाने के अपने ही फायदे हैं. बैंगन खाने से दिल की बीमारी, ब्लड शुगर हमेशा कंट्रोल में रहता है. आपको जानकर हैरानी होगी कि बैंगन खाने से वजन भी कम हो जाता है. लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि कुछ लोगों बैंगन खाने से परहेज करना चाहिए.

ये लोग न खाएं बैंगनः गैस और पेट की गड़बड़ी वाले लोग भूल से भी न खाएं बैंगन

जिस व्यक्ति को अक्सर पेट की गड़बड़ी रहती है उन्हें बैंगन कभी नहीं खाना चाहिए. जिन व्यक्ति को गैस की समस्या होती है उन्हें भी बैंगन नहीं खाना चाहिए.

एलर्जी होने पर

अग किसी व्यक्ति को किसी भी तरह की स्किन एलर्जी होती है उन्हें भी बैंगन से दूरी बना लेनी चाहिए. क्योंकि बैंगन खाने से आपकी एलर्जी ट्रिगर हो सकती है.

डिप्रेशनः अगर कोई व्यक्ति डिप्रेशन की दवा लें रहा या किसी भी तरह के डिप्रेशन से जूझ रहे है तो आपको बैगन खाने से से बचना चाहिए, क्योंकि इसे खाने से आपकी दवा का असर कम हो सकता है.

खून की कमीः शरीर में खून की कमी है तो बैंगन भूल से भी नहीं खाना चाहिए. क्योंकि यह आपके खून बनने में दिक्कत करता है.

आंखों में जलनः जिन लोगों में आंखों में दिक्कत रहती है जैसे जलन या सूजन उन्हें बैंगन नहीं खाना चाहिए. क्योंकि यह दिन पर दिन और बढ़ सकता है.

बवासीरः बवासीर से पीडिघ्त हैं तो बैंगन से दूरी बना लें. वरना आपकी दिक्कत समय के साथ अधिक बढ़ सकती है.

स्टोन जिन लोगों को स्टोन की दिक्कत होती है उन्हें बैंगन भूल से भी नहीं खाना चाहिए. क्योंकि बैंगन में पाया जाने वाला ऑक्सलेट पथरी की प्रॉब्लम और बढ़ा सकती है.